Amritpath Monthly

ओ३म्

समाचार पत्र पंजीयन सं०
UTTHIN / 2003 11080

अंक-5 | सितम्बर - अक्टूबर 2025 | वर्ष-22

अमृत पथ

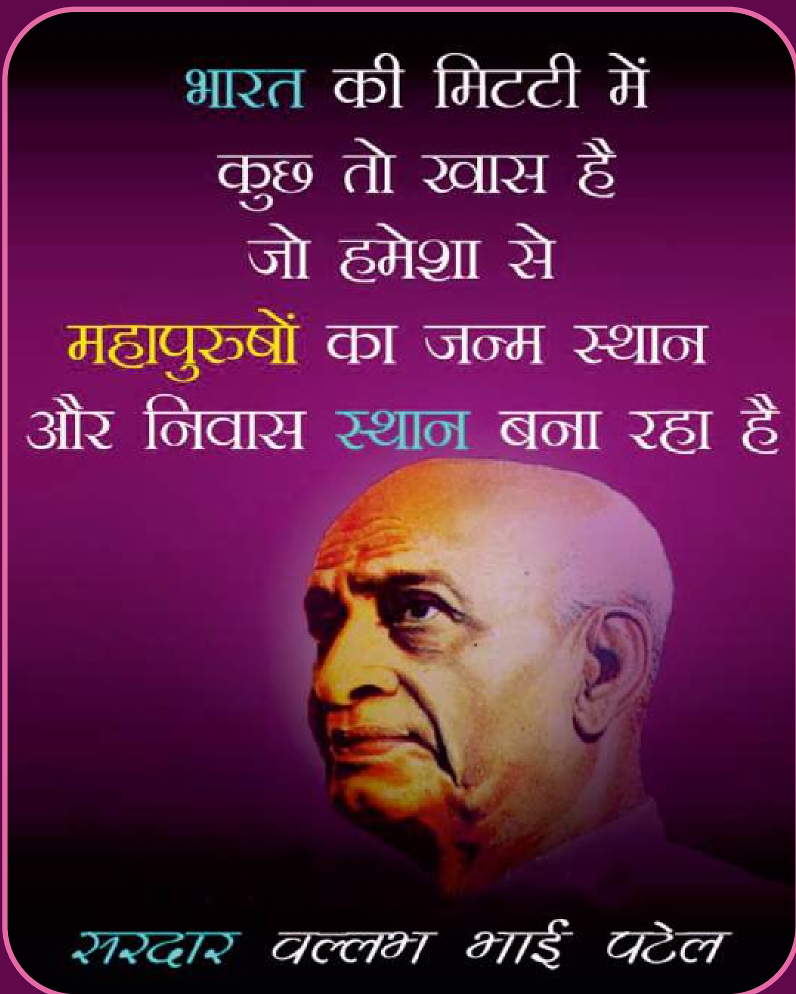

जन्म: 31-10-1875 -- निधन: 15-12 1950

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०) का मासिक मुख पत्र

आर्य समाज विकासनगर का 131वाँ वेद प्रचार सप्ताह एवं वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर धामावाला का वेद प्रचार-प्रसार
महोत्सव (24 सितम्बर से 28 सितम्बर 2025)के छाया चित्र

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अमृत पथ

वर्ष-22 अंक-5

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०) का मुख पत्र

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत
उठो, जागो, परमात्मा देव से वरदान प्राप्त करो

-: संस्थापक:-

श्री यशपाल आर्य जी

-: परामर्शदाता मण्डल :-

डॉ० रघुवीर वेदालङ्कार जी
डॉ० योगेश शास्त्री जी
आचार्य डॉ० धनन्जय आर्य जी
आचार्य डॉ० विनय विद्यालंकार जी

-: प्रबन्ध सम्पादक :-

श्री ज्ञान चन्द गुप्ता आर्य जी
9897346730

-: सह प्रबन्ध सम्पादक :-

श्री मनमोहन जी
9149259685

-: सम्पादक :-

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव जी
9837011321
श्री चन्द्र प्रकाश जी
9761939183

-: सह सम्पादक :-

श्री सुधीर गुलाटी जी
7060299951

-: कार्यालय :-

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०)
आर्य समाज मन्दिर, धामावाला,
देहरादून - 248001

समाचार पत्र पंजीयन सं०

UTTHIN /2003 /11080

मूल्य

एक प्रति : रू.20/- वार्षिक : रू.200/-
आजीवन : रू.2000/-

Email : aryapsuk@gmail.com
Facebook : Arya Pratinidhi Sabha Uttarakhand

अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1	जल ही जीवन है	2-3
2	''समजः पशूनां समाजः नृणाम्''	4-6
3	सन्ध्या	7-11
4	आओ स्मरण करें महान पुरूषों को.....	12-15
5	समाचार	16
6	उपनिषदों की कहानियां	17-19
7	भेल आर्य समाज मन्दिर में महर्षि दयानंद शोध संस्थान की स्थापना	20
8	आर्य समाज मंदिर विकास नगर का 131वां वेदप्रचार सप्ताह एवं वार्षिकोत्सव	21
9	आर्य समाज मन्दिर धामावाला का पांचदिवसीय वेदप्रचार- प्रसार महोत्सव का सहर्षोल्लास समापन	22-23
10	आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के कार्यालय का उद्घाटन	24

विज्ञापन दरः

पिछला पृष्ठ कवर रंगीन	:	रु. 5100/-
अंदर पृष्ठ कवर रंगीन	:	रु. 3100/-
अंदर पृष्ठ ब्लैक-व्हाईट फुल	:	रु. 1100/-
अंदर पृष्ठ ब्लैक-व्हाईट	:	रु. 600/-

मुद्रक और प्रकाशक

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव जी एवं श्री चन्द्र प्रकाश जी द्वारा आदर्श प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, पल्टन बाजार, देहरादून से मुद्रित एवं प्रांतीय कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०) आर्य समाज मन्दिर धामावाला देहरादून से प्रकाशित।

अमृत पथ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी वाद के प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र देहरादून होगा।

जल ही जीवन है

रविदेव गुप्त

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः। ऋग्वेद 10.9.4

(देवीः आपः) जल देवियां (नः अभिष्टये) हमारे अभीष्ट की पूर्ति के लिए और (पीतये) पेयजल के लिए (शम्) सुखदायक (भवन्तु) हों। (शम्) विद्यमान रोगों के शमन के लिए और (योः) रोगों से अछूत रहने के लिए (नः अभि) हमारे सामने (स्रवन्तु) वे सतत प्रवाहित होती रहें।

जल इस सृष्टि का एक अनमोल पदार्थ है। पंचभूतों में जीवन की खोज का प्रथम बिंदु है। हिंदी भाषा में जल को पानी कहा जाता है। भाषा–विज्ञान की दृष्टि से, पानी प्राण का साधन है। पानी के कारण हमारा जगत् प्राणवान् है।

जल के अनेक दिव्य गुण होते हैं जिन्हें जीवन में धारण करने से मनुष्य सफलकामी, निरोगी और दीर्घजीवी बन सकता है। उदाहरण के लिए, जल का एक गुण है निरंतरता। निःशब्द रात में जब पूरा समाज सोया हुआ रहता है तब कलकल निनाद करती हुई नदियां अपनी जलराशि को आगे आगे प्रवाहित करती हैं। जल की इसी निरंतरता से प्रभावित होकर ऋषियों ने 'चरैवेति चरैवेति', अर्थात, 'चलते रहो, चलते रहो' सूत्र का उद्घाटन किया है। जनकल्याण की दिशा में हमें भी आलस्य का त्याग कर सदा आगे बढ़ना चाहिए, यह शिक्षा जल से ग्रहण करनी है।

जल का अन्य एक गुण है बाधा से अविचलित रहना। प्रवाहित जलराशि को बांध के द्वारा आबद्ध कर लेने पर वह उसी बांध के किनारे एकत्रित होती रहती है। भंवर बनाती हुई क्रमशः वह अपनी ऊंचाई इतनी बढ़ा देती है कि बांध के ऊपर से निकलने लगती है। कभी कभी तो अपनी शक्ति से वह बांध को तोड़ भी डालती है। जीवन में हमें भी बाधाओं से सीख लेनी चाहिए और दूसरी, तीसरी या अनेक बार के प्रयासों से कार्य के संपादन में दक्षता लानी चाहिए। एक कहावत भी है, ठोकर खाने से ही अकल मिलती है, बादाम खाने से नहीं।

प्रतिकूलता में लोहा लेने की सामर्थ्य भी जलशक्ति में देखी जाती है। 100 की तापमात्रा में उबल रहा गर्म पानी भी आग को बुझाने की क्षमता रखता है। अधिक गर्म होने की स्थिति में जल भाप बन कर रूप तो बदल लेता है, पर अनुकूल परिस्थिति में पुनश्च घनीभूत होकर अपना पूर्वरूप पा लेता है। बर्फ भी जल का एक प्रतिकूल रूप है, अनुकूल परिस्थिति में वह एक न एक दिन पुनः मूलरूप द्रव में बदल जाता है। मनुष्य भी प्रतिकूल परिस्थिति में अगर अपने को संयत रखता हुआ अपना स्वभाव नहीं त्यागता तो संसार में वह सुख का साम्राज्य विस्तार करता है।

जल का एक अन्य गुण यह है कि वह अपनी जड़ों का या उद्गम स्थानों का विस्मरण नहीं करता। यद्यपि हिमालय, आदि पहाड़–श्रृंखलाओं से निकलता हुआ जल सागर पहुंचता है और सूर्य रश्मियों द्वारा ऊपर उठता हुआ मेघ बनता है तथापि वह अनुकूल हवा से प्रवाहित होता हुआ अपने मूलस्थान हिमालय, आदि पर्वत श्रृंखलाओं पर पुनः वृष्टि के रूप में आ पहुंचता है। जल के इस दिव्य गुण के अनुरूप हमें भी अपनी भाषा, संस्कृति, इतिहास और परंपरा का विस्मरण नहीं करना चाहिए।

जल निर्मलता का भी प्रतीक है। मलिन–दुर्गंध पदार्थों को धोकर निर्मल कर देने की सामर्थ्य इसमें है। पाप–ताप को धो डालने की क्षमता भी यह रखता है। पश्चात्ताप की स्थिति में शरीरस्थ जल मन और हृदय को पवित्र करता हुआ कैसे आंसू बन कर आंखों को नम करता है! प्रियजनों के वियोग में परिशुद्ध प्रेमभाव को व्यक्त करता हुआ यही जल अश्रुधारा बनकर कैसे टपक पड़ता है! 'शर्म से पानी पानी होना', यह कहावत जल द्वारा अंतःकरण की निर्मलता को व्यक्त करती है। अतः हमें भी स्वयं को और हमारे आस–पास के वातावरण को निर्मल, परिशुद्ध करने की भावना रखनी चाहिए। पश्चात्ताप, शोक और शर्म के अश्रुओं से अंतः करण को सदा पवित्र रखना चाहिए।

जल समरसता का भी प्रतीक है। वह अपने से हल्के को सिर पर रखता है। जल के घनत्व से लकड़ी, आदि पदार्थों का घनत्व कम होने के कारण वह उन्हें अपने ऊपर तैराता है, सम्मान देता है। अपने समान

घनत्व वाले पदार्थों के साथ वह समभाव रखता है। अपने से भारी की उपेक्षा करता है। अपने मित्र द्रव्यों के लिए वह घुलनशील या विलायक सिद्ध होता है। हमें भी जीवन में जल के समान समता के सूत्र से बंधना चाहिए। हमें सूर्य और हवा से प्रेरकता, समरसता का ज्ञान प्राप्त कर जल के समान समभाव से भावित हो जाना चाहिए।

जल का प्रतिकारात्मक उग्र रूप भी हमारे आचरण में उतरना चाहिए। जल अपने विकास के प्रतिबंधों को जड़ से उखाड़ फेंकता है। शीतल जलराशि भी अपने बाधक पत्थरों को, पहाड़ों को क्रमशः रेत में बदल देती है। सूर्य की उग्रता से लोहा लेकर ग्रीष्म ऋतु में भी यही जल शीतलता प्रदान करता है। प्रतिकूल बर्फ की सतह के नीचे जलचरों के लिए आश्रय प्रदान कर यह स्वयं को तरल द्रव के रूप में रूपांतरित करता है।

पृथ्वी पर प्राणियों की उत्पत्ति का प्रमुख कारण जल है। वह वृक्ष—वनस्पति, आदि प्राणी जगत् का प्राण है। समस्त गुणकारी ओषधियों के रूप में वृक्ष—वनस्पतियों में ऊर्जा बनकर यही तो रमण कर रहा है। शरीर में रुधिर, रस, आदि के रूप में अभिव्यक्त होकर यही जल प्राणियों के हृदयों का संचालक है।

पृथ्वी में दो तिहाई भाग जल है। शरीर में भी दो तिहाई भाग जल है। ओषधि—वनस्पतियां अपने पत्तों द्वारा वातावरण में जल का उत्सर्जन कर सतत आर्द्रता लाती रहती हैं। अतः जल एक वैश्विक ऊर्जा है।

जल की तुलना रुद्र देवता के साथ भी की जाती है। अतिवृष्टि से बाढ़ का आना और अनावृष्टि से सृष्टि का झुलस जाना यही जल का रुद्र रूप है। प्रलयकालीन जल प्रवाह से धरती को डुबा देना जल का उग्र कर्म है। सुनामी जैसे जल—प्रलय से हम सब परिचित ही हैं।

जल एक क्षमाशील विग्रह भी है। शत्रुता इसका स्वभाव नहीं है। माँ के समान यह हमें अपना मधुर रस पिलाता है। एक दयालु बहिन के समान यह हमारी गंदगी को झाड़—पोंछकर अपने अवयवों से हमें निर्मल बनाता है। वैदिक ऋषियों ने यही बात कही है,

अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम् ।

पृञ्चतीर्मधुनापयः। ऋग्वेद 1.23.16

अर्थात, याज्ञिकों की ये माताएं और बहिनें मधु से सनी हुई जलराशियों को धारण कर विविध मार्गों से गुजर रही हैं।

जल का अपना कोई रंग नहीं है। जिसमें मिला दो यह वही रूप ले लेता है। इसका अपना कोई आकार नहीं है, जिसमें भर लो वही बन जाता है। अतः जल की भांति हमें भी अपने जीवन में मृदुता, सरलता और परिस्थिति की अनुकूलता सीखनी चाहिए।

जल—संरक्षण की ओर प्रेरित करते हुए संत रहीम ने कहा था, रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून। पानी गये न ऊबरे, मोती मानस चून।

■ ■ ■

समता

जल समता का प्रतीक है। बादल बनकर जल आकाश में ऊपर उठता है। वात के यान पर चढ़कर दूर दूर जाता है। बूंद बूंद वृष्टि द्वारा नीचे आता है, बहता बहता सहज स्वभाव से पुनः समुद्र में आ जाता है। इस अनवरत चक्र में जल सदा शीतल, शांत रहता है।

जल में पत्थर फेंकिए। जल आदरभाव से ऊपर उछलेगा और पत्थर को अंदर बिठाकर पुनः सहजस्वभाव से जल समावस्था को प्राप्त हो जाएगा।

कार्य कीजिए, कर्तव्य कर्मों का निष्पादन कीजिए, संसार को अनुप्राणित कीजिए, जीवों में जीवन का संचार कीजिए किंतु समता में समाहित रहते हुए।

पर्जन्य आते हैं, बरसते हैं पापियों पर भी, धर्मात्माओं पर भी, समभाव से, बिना किसी भेदभाव के। वे बरसते हैं सर्वत्र हरियाली और शीतलता भरने के लिए। वे बरस जाते हैं प्रतिफल चाहे बिना, परिणाम की चिंता न करते हुए।

—स्वामी 'विदेह'

"समजः पशूनां समाजः नृणाम्"

आचार्य आनन्द पुरूषार्थी

समज पशुओं का होता है परंतु समाज मनुष्यों का होता है। जब हम सामाजिक सुधार पर महर्षि दयानंद के योगदान पर विचार करते हैं तो हमें 19वीं शताब्दी के भारत की राजनीतिक आर्थिक धार्मिक व सामाजिक परिस्थितियों को देखना चाहिए। इस शताब्दी को भारत के पुनर्जागरण का काल कहा गया है। राजा राममोहन राय के बड़े भाई श्री जगमोहन राय दिवंगत हो गए उनकी पत्नी अपनी युवा भाभी अलका मंजरी को इन्होंने प्रेरणा दी वे सती न होने के लिए राजी हो गई पुनरपि समाज जाति के लोगों ने विरोध करते राजा राममोहन राय को श्मशान घाट में वृक्ष से बांध कर उनकी चीखती चिल्लाती भाभी को उनके ही समक्ष चिता में जबरदस्ती जिंदा जला दिया था। राममोहन राय जैसे समाज सुधारक मूर्ति पूजा बहु विवाह बाल विवाह, सती प्रथा व त्याज्य मानते थे वे भी संस्कृत के उपयोग की आवश्यकता को स्वीकार करने के बाद भी मैकाले की शिक्षा पद्धति अंग्रेजी अध्ययन के प्रबल समर्थक थे। राममोहन राय के बाद देवेंद्र नाथ ठाकुर ब्राह्मसमाज के संचालक नेता थे पर वे वेदों के बारे में स्पष्टमति नहीं बना सके। उन्होंने अपने चार शिष्यों आनंदचन्द, तारकनाथ, बनेश्वर व रामनाथ को वेदाध्ययन के लिए काशी भेजा। वहां से आकर वेदो के बारे में देवेंद्र जी के समक्ष जो अवधारणा उन्होंने प्रस्तुत की वह उज्ज्वल व उत्साहवर्धक नही थी। इससे संपूर्ण ब्राह्मसमाज संस्था के अनुयायी वेदों की प्रामाणिकता के सिद्धांत से पृथक ही हो गए। 1857 में केशवचंद्र सेन ब्रह्म समाज के नेता बने। ईसाइयत से अधिक प्रेरित अत्यन्त योग्यता सम्पन्न इस युवक का कहना था जब सभी मतावलम्बी अपने मान्य मत पंथी के ग्रंथों को ईश्वरकृत व प्रामाणिक मानते है तो केवल वेदो को ही ईश्वरकृत व अपौरुषेय कैसे माना जा सकता है ? मुंबई हाईकोर्ट के न्यायाधीश महादेव गोविंद रानाडे ने ब्रह्मसमाज के सिद्धांतों के निकट ही प्रार्थना समाज की स्थापना महाराष्ट्र मे की थी।

इस प्रकार हम तत्कालीन मनस्वियों को देखें तो ज्ञात होता है कि सभी समाज सुधारक व विभिन्न संस्थाएं हिंदुओं की विभिन्न कुरीतियों अंधविश्वास को दूर तो करना चाहती थी पर इनके अनुयायी स्वयं ही अनेकानेक कर्मकांडों, रूढ़ियों का न केवल पालन करते थे अपितु अनेक सिद्धांत इनके स्वयं ही के सामने अस्पष्ट से थे। ये सभी आंदोलन बंगाल, महाराष्ट्र अथवा एक दो प्रान्तों तक सीमित रहे। इनका अखिल भारतीय स्वरूप न बन सका।

स्वामी दयानंद अत्यंत प्रतिभाशाली व बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे जिन्होंने न केवल देश के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय उत्थान पतन पर दृष्टिपात किया अपितु जनसामान्य की समस्या और कष्टों का युक्तियुक्त समाधान भी किया। प्राच्यविद्याविद् थे इसलिए ही आपने नवजागरण में प्राचीन वैदिक वाड्मय, आर्ष परंपरा व ऋषियो की तात्विक दृष्टि की परिधि तथा गरिमा का पूर्णरूपेण ध्यान रखा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मुंबई में 1875 मे आर्यसमाज की स्थापना की। पूर्वकालिक तथा बाद की समस्त संस्थाओं से अलग इस संस्था का सभी अंचलो में प्रचार प्रसार हुआ। हजारों हजार व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य व सैकड़ों शाखायें इसकी देश–विदेशों में स्थापित हुई।

1901 में भारतीय जनगणना के अध्यक्ष श्री रिसले ने आर्यसमाज को 19 वी शताब्दी का मुख्य सुधार आंदोलन कहा। इसी प्रकार मि. ब्लंट ने 1911 ईस्वी में संयुक्त प्रांत जनगणना संबंधी रिपोर्ट में आर्यसमाज को पिछली सदी का सबसे बड़ा सुधार आंदोलन कहा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज सुधार के जिन कार्यों की नींव रखी या उनको नवीन स्वरूप प्रदान किया उनको हम इन बिन्दुओं में समाहित कर सकते हैं–

जो शूद्र कुल में उत्पन्न होकर ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण कर्म स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य हो जाए वैसे ही ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो और उसके गुण कर्म स्वभाव शूद्र के सदृश्य हो तो वह शूद्र हो

जाए वैसे क्षत्रिय, वैश्य कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण और शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाता है अर्थात् चारों वर्णों में जिस जिस वर्ण के सदृश जो जो पुरुष व स्त्री हो वह वह उसी वर्ण की गिनी जावे ।

ऋषि दयानंद के कर्मणा वर्ण जाति निर्धारण के शुद्ध स्वरूप से समस्त हिंदू समाज को एक धवल व स्वच्छ आकाश प्राप्त हो गया जो कि मानव मात्र के लिए आदर्श था। इस ने पूरे समाज को एक व्यापक मार्गदर्शन दिया इस ने आने वाले दशकों तक की व्यवस्था को सूक्ष्मता से प्रभावित व परिवर्तित किया ।

(2) आश्रम निर्धारण – पाश्चात्य जगत में बचपन से ही बच्चे को धनोन्मुखी बनाया जाता है परंतु स्वामी दयानन्द विद्यार्थिकाल को देह, मन. बुद्धि व आत्मा की शक्तियों के विकास के लिए सर्वथा श्रेष्ठ व उपयुक्त मानते हैं। वे लिखते हैं अपनी संतानों को ब्रह्मचर्य उत्तम शिक्षा, विद्या से शरीर और आत्मा के बल को बढ़ा दे। जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और धर्म का प्रचार होता है वही सौभाग्यवान् होता है।

अतः जो मोक्ष और संसार के सुख की इच्छा करता हो वह गृहाश्रम का धारण करे। जो गृहाश्रम की निंदा करता है वही निंदनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है। अतः दयानंद गृहस्थ को वानप्रस्थ व अन्त में संन्यासी या परिव्राट् होने का निर्देश देते हैं। दंड कमंडलु और काषाय वस्त्र आदि बाह्य चिह्न धारण धर्म का कारण नहीं सब मनुष्यादि प्राणियों को सत्योपदेश और विद्यादान से उन्नति करना संन्यासी का मुख्य कर्म है। स्वामीजी का कहना उचित ही था कि निठल्ले ब्रह्मचारी हो, गृहस्थी हो, या वानप्रस्थ या संन्यासी हो चारों ही समाज पर भार हैं। (3) कन्याओं को विद्या का अधिकार – स्त्रीशूद्रौ नाधीयतामिति इस अनर्गल सूक्ति का जबरदस्त प्रत्याख्यान महर्षि यजुर्वेद 26 / 2 मंत्र के प्रमाण से करते हैं–

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।

ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।

इसी प्रकार ''इमं मंत्रं पत्नी पठेत'' श्रौत सूत्र में स्त्री यज्ञ में इस मंत्र को पढे ऐसा स्पष्ट विधान आता है। तथा ''स्त्री ही ब्रह्मा बभूविथ'' यह प्रमाण भी मिलता है। कहना न होगा लाखों–करोड़ों मातृ शक्ति के लिए वेदाध्ययन सहित आधुनिक शिक्षा के द्वार खोलने में महत्वपूर्ण भूमिका महर्षि दयानंद की रही है।

महर्षि दयानंद प्रत्येक कन्या को विशेष तौर से आयुर्वेद के ज्ञान की शिक्षा का प्रावधान करते हैं एक उत्तम स्त्री से एक उत्तम संतान पूरे विश्व को दी जा सकती है।

16 संस्कारों की पूरी प्रक्रिया को जब तक देवियां स्वयं नहीं समझेंगी, वे उत्तम संतान को जन्म कैसे दे सकती हैं ?

(4) विदेश गमन से धर्म की हानि नहीं – वे देश देशांतर व दीप दीपांतर में राज्य व्यापार, वैवाहिक संबंधों के बिना स्वदेश उन्नति को असंभव सा मानते हैं। महर्षि व्यास जी अपने पुत्र शुक और शिष्यों सहित अमेरिका (पाताल देश) में रहते थे। आत्मविद्या विषयक गंभीर गवेषणा के लिए वे शुक्राचार्य को मिथिलापुरी भेजते हैं यूरोप चीन आदि देशों की यात्रा करते हुए वे भारत की ★ मिथिलापुरी आकर महाराजा जनक से चर्चा करते हैं। श्री कृष्ण अर्जुन अश्वतरी (अग्नियान नौका) पर बैठकर पाताल में जाकर महाराजा युधिष्ठिर की यज्ञ में उद्यालक ऋषि को ले आए थे । धृतराष्ट्र का विवाह गांधारी से हुआ था जो संप्रति अफगानिस्तान है। माद्री ईरान के राजा की कन्या थी। अर्जुन की पत्नी उलोपी पाताल देश की थी। यदि हमारे पूर्वज विदेश गमन को दुःखद मानते तो मनुस्मृति में सामुद्रिक नौकायानो का प्रयोग कर लेना लिखा है वह कैसे संभव हो पाता ?

महर्षि दयानंद ने आज से डेढ़ सौ साल पहले कहा था विदेश गमन से कोई हानि नहीं होती धर्म नष्ट नहीं होता, इसका बहुत बड़ा योगदान है।

(5) आचारानाचार भक्ष्याभक्ष्य – स्वामी जी दसवें समुल्लास में एक आदर्श आचार संहिता देते हैं जिसमें मद्य मांसादि के सेवन का निषेध तथा युद्ध भूमि में आवश्यक होने पर खड़े होकर भी भोजन पान का विधान करते हैं।

भक्ष्याभक्ष्य दो प्रकार का होता है

एक धर्मशास्त्रोक्त दूसरा वैद्यक शास्त्रोक्त।

मलिन विष्ठा मूत्रादि के संसर्ग से उत्पन्न हुये शाक फल–मूल आदि के खाने को अनुचित एवं मद्य, गांजा, भांग, अफीम आदि बुद्धिनाशक पदार्थों सड़े गले बिगड़े दुर्गंध आदि से दूषित, अच्छी प्रकार न बने हुए खाद्य पदार्थों का सेवन का स्पष्ट निषेध करते हैं।

(6) संस्कृत हिंदी का प्रचलन – महर्षि दयानंद ने संस्कृत पाठशालाये प्रारंभ की जो बाद में आर्यों द्वारा स्थापित गुरुकुल के रूप में संसार के समक्ष आई। स्वामी जी ने देश की शिक्षा व्यवस्था को एक नवीन दिशा प्रदान की। गुजरात प्रान्तीय होने पर भी संस्कृत व हिंदी में प्रवचन व 20000 पृष्ठ की विशाल साहित्य सामग्री जब आपने संस्कृत व हिंदी में प्रदान की तो बाद में देश की राष्ट्रभाषा हिंदी बनाने में इसने महत्वपूर्ण स्तंभ का काम किया। कहना उचित होगा कालांतर में आर्यो व गुरुकुलों के स्नातकों ने हिंदी रक्षा आंदोलन में प्राणपन से कार्य किया। ये नारा आर्यों की ही देन था ''देश की भाषा हिंदी है तो पंजाब में क्यों पाबंदी है'' इस ने तत्कालीन पंजाब सरकार को हिला दिया। आर्य भाषा के कारण आज पूरा देश एक सूत्र मे बंधा दिखाई देता है तो इस में आयों का भागीरथ प्रयास छिपा हुआ है।

(7) वेदाध्ययन अध्यापन अनिवार्य – वेद शब्द सत्य विद्याओ का पुस्तक है वेद का पढ़ना– पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इस नियम के पालन से लाखों लोगों को वेदादि शास्त्रों के अध्ययन का मार्ग मिला अन्यथा रामचरितमानस व भागवतादि पुराण से आगे किसी शास्त्र के अध्ययन का कोई विचार हिंदुओं में नहीं होता था।

(8) देश की स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक – 1857 की क्रांति विफल हो चुकी थी यद्यपि जनसामान्य लोकमान्य तिलक को ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' इस नारे के कारण महिमामंडित करता है परंतु ऋषि दयानंद के ग्रंथ आरोपी विनय में लिखा है अंधविश्वासी राजा हमारे देश में कभी न हो तथा हम लोग पराधीन कभी न हो ।

(9) कृषि वा गोपालन दसवें समुल्लास में महर्षि दयानंद लिखते हैं देखो जब आर्यों का राज्य था तब यह महोपकारक गायादि पशु नहीं मारे जाते थी तभी आर्यावर्त व अन्य भूगोल देशों में बड़े आनंद से मनुष्यादि प्राणी बसते थे। अपनी लघु पुस्तिका ''गोकरुणानिधि'' में उन्होंने एक गाय के शरीर से दूध व अन्न आदि होने से एक गाय से कुल 399760 जनों को लाभ का प्रमाण दिखाया है । वेद भाष्य में कृषक को राजाओं का राजा कहकर महत्व प्रदान करते हैं। किसान के खुशहाल होने से समस्त अर्थव्यवस्था उत्तम होती है।

(10) कुछ अन्य बिंदु – जैसे सच्चे ईश्वर की उपासना, अग्निहोत्र, पंच महायज्ञ का घर–घर में अनुष्ठान, विवाह संबंधी विकृतियो को दूर करना, राजार्य, विद्यार्य धर्मार्य सभा का गठन। अस्पृश्यता पर कड़ा प्रहार, परतंत्रता के विरोध में स्वयं उतरकर 1857 की क्रांति में योगदान आदि ।

सदियों से भटक रहे थे जो भाई, उनको राह दिखाई थी तूने

काल भी न मिटा सके ऐसी शमा जलाई थी तूने

घनघोर तिमिर के आंगन में तू बीज ऊषा के बोता था

आवाज लगाई थी तूने जब सारा भारत सोता था ।।

गतांग से आगे...

अथ उपस्थान मन्त्र

वरुणस्य चक्षुः

वरुण के तीन अर्थ हैं (क) वरणीय व्यक्ति, (ख) न्यायकारी राजा, (ग) जलों (दूधमात्र) का रस। (क) वरणीय व्यक्ति स्वात्मवत् दूसरों के सुख–दुःख, हानि–लाभ, मान–अपमान का अनुभव कर उसके सुख में प्रसन्न होने वाला तथा दुःख में, कष्ट निवारण का भरपूर प्रयत्न करने वाला वरुण कहाता है। अन्यायकारी बलवान से न डरे और निर्बल धर्मात्मा से डरता रहे। अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओ–चाहे वे निर्धन हों, निर्बल हों, अनाथ हों और गुणरहित हों की रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण करे। तथा अधर्मी चाहे चक्रवर्ती राजा, धनवान, बलवान, सनाथ और गुणी हो, उसका नाश अवनति, अप्रियाचरण सदा किया करें। इस काम से उसे चाहे कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, सम्पूर्ण धन चला जाय अपूर्व–मान चला जाय, प्रिय प्राण चले जायें, परन्तु मनुष्य धर्म से कभी पृथक् न हों (म०द०)। इसी को श्री भर्तृहरि ने अपने अनूठे ढंग से कहा है–

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि का स्तुवन्तु,

लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,

न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

अर्थ– नीतिनिपुण लोग चाहे निन्दा करें या स्तुति करें सम्पत्ति सारी की सारी चली जाए या घर में यथेष्ठ धन भर जाय, आज ही कोई मार डाले या युग–युग तक जीने का आशीर्वाद दे, परन्तु धीर लोग सत्य न्याय के मार्ग से (इन प्रलोभनों या दबावों के भय से) एक कदम भी विचलित नहीं होते।

वरणीय व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह सत्यमानी, सत्यवादी एवं सत्याचारी, पक्षपातरहित परोपकारी विद्वान् हो । महाभारत कहता है।

न हि सत्यात्परो धर्मः, नानृतात्पातकं परम्।

न हि सत्यात्परं ज्ञानम्, तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

न्यायकारी राजाः

राजाओं में न्यायकारी राजा वरुण है। न्याय का आधार सत्य, पक्षपात रहित और परोपकार की भावनाएँ हैं। राजा राष्ट्र के प्रत्येक प्राणी – मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि–से न्याय करता है। उसे सभी के हित की चिन्ता रहती है। हितसाधन परोपकार की निःस्वार्थ भावना से करता है। उसका अपना बेटा भी अगर स्वार्थवश, नियम भंग करता है, अन्याय या अत्याचार करता है तो उसे सामान्य प्रजा से सहस्र गुणा अधिक दण्ड देना ही न्याय है। जिस राष्ट्र में सत्य पर आधारित, परोपकार भावना से अनुप्राणित और पक्षपात रहित न्याय का राज्य है, वहां कभी दुःख, दारिर्द्य, अविद्या आदि अभावों की सम्भावना नहीं। वहीं पर सुख, समृद्धि, शान्ति स्नेह, परस्पर सहयोग का निर्मल वातावरण सदा विद्यमान रहता है।

जो ''वरुण'' राजा का आदर्श है, वह स्वयं कैसा होगा ? उसका दर्शन विचित्र आनन्द का देने वाला है ।

वरुण जलों का देवताः

जल का मुख्य गुण है स्नेह। स्नेह का अर्थ चिकनाई (Fat) नहीं है। इसका अर्थ है. बिखरों को जोड़ना। पानी मिलाने से आटा, मैदा, सीमेंट आदि सम्पूर्ण पदार्थ जुड़ कर ढेला बन जाते हैं। रेत के कण भी जुड़ जाते हैं। प्रसिद्ध है कि ''रेत का महल'' क्षण में गिर जाता है। पर रेत का महल जितनी थोड़ी देर ठहरता है, वह जल के स्नेह गुण के कारण ही ठहरता है। अभिप्रायः है विभक्त हृदयों को मिलाने वाला व्यक्ति "वरुण" है। एक ही स्वभाव, गुण या कर्म वाले लोग परस्पर मिल ही जाते हैं परन्तु टूटे (बिखरे) दिलों को मिलाना अत्यन्त कठिन काम है। यही असम्भव को सम्भव करने वाला "वरुण'' है। जल का दूसरा गुण है ''नीचे की ओर बहना''। अर्थात् अपने से छोटों पर–चाहे वे आयु, धन या विद्या या बल या सहायकों की दृष्टि से छोटे हों–उन पर दया, सहयोग और स्नेह की भावना बनाए रखना।

जल का तीसरा गुण है शीतलता। जो व्यक्ति अपने कर्म से या गुण से या स्वभाव से या वचन से, दूसरे, अभावग्रस्त मनुष्यों के हृदयों को शीतलता

प्रदान करता है, हताशों को जीने के लिए उत्साहित करता है, उन्हें नया जीवन प्रदान करता है, वह भी वरुण कहलाता तीनों अर्थों में वरुण के स्वरूप को जिसने जाना है, वह उस उत्कृष्ट वरुण को–जो इसका पथ प्रदर्शक 'चक्षु' है–जब उपासक अनुभव करता है, देखता है, तब अकस्मात् बोलता है–''चित्रं देवानामुदगादनीकम्।''

<u>अग्नेः चक्षुः</u>

यहां अग्नि शब्द से परमेश्वर का ग्रहण नहीं है। भौतिक अग्नि का ग्रहण है, शारीरिक एवं मानसिक अग्नि का ग्रहण है, जो विभिन्न रूपों में, विविध प्रकार से, प्राणि जगत् का कल्याण कर रहा है। मनुष्य जीवन के अत्यन्त साधारण काम–भोजन बनाना, पानी गरम करना, शरीर तापना आदि तथा बड़े–बड़े कारखानों का चलाना, वाष्प बनाना, लोह आदि धातुओं को पिघलाकर विविध बर्तन, पुर्जे, यन्त्र–संयन्त्र बनाना–सभी अग्नि द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। हमारे शरीर के तापमान को बनाए रखना भी अग्नि से है। शरीर में भोजन का पचना भी एक दूसरी अग्नि से है। भोजन नहीं पचता तो मन्दाग्नि रोग होता है। जब अधिक मात्रा में खाया जाय, परन्तु शरीर में अनुपात से उतनी पुष्टि न हो तो वह ''भस्माग्नि'' रोग होता है।

भौतिक अग्नि के स्वरूप को समझें तो बड़ा विचित्र लगता है। साधारणतया लपट को (ज्वाला को) अग्नि कहते हैं। लपट मात्र अग्नि नहीं। वहां तो अर्धज्वलित गैसें हैं। मोमबत्ती की ज्वाला को गत्ते से आधा दबा दीजिए। फिर शीघ्र ही हटाइए। गत्ते में एक काला गोल घेरा दिखाई देगा। यह काली वस्तु अधजला कार्बन है। इसे काजल भी कहते हैं। धधकते हुए गरम लाल कोयले या लाल–लाल लोहे में लपट नहीं पर वहां अग्नि तत्त्व उपस्थित है। हम इन्हें छू नहीं सकते, क्योंकि यह गरम है। अग्नि अत्यन्त सूक्ष्म है, जिसकी उपस्थिति प्रकाश और ताप से जानी जाती है। यह दाह्य वस्तुओं द्वारा प्रकट होता है। दाह्याभाव में विलीन होता है। यह नित्य है, निराकार वस्तु के कण–कण में प्रवेश करता है। वस्तुतः अग्नि पदार्थ के समस्त आकार को तप्त एवं प्रदीप्त करती है।

अग्नि पदार्थों में तीन प्रकार से प्रवेश करता है। प्रथम ''वाहन'' क्रिया द्वारा। लोहे के टुकड़े का एक किनारा गरम किया जाय तो अग्नि धीरे–धीरे क्रमशः लोहे के टुकड़े के समीपस्थ भाग को गरम करती हुई, दूसरे छोर तक पहुंचाती है। एक साथ ही सारा पदार्थ गरम नहीं होता। इसे थोड़ी–थोड़ी देर बाद छूकर जाना जा सकता है। इस क्रिया में लोहे का. वह भाग गरम होता है, जिसका सम्पर्क अग्नि से है। वही भाग अपने अगले भाग को गरम करता है। और थोड़ी देर बाद वह वस्तु हाथ से पकड़ी नहीं जाती। खोया बनाने वाली पोनी अथवा हलवा बनाने वाले उपकरण का हत्था लकड़ी का होता है। सभी धातुएं इसी प्रकार गरम होती हैं।

द्वितीय क्रिया का नाम ''परिवहन'' है। द्रव पदार्थ जैसे–जल, तेल आदि– इस क्रिया से गरम होते हैं। अर्थात् उनमें द्रवकण गति करते हैं। अग्नि के सम्पर्क में आने वाले द्रव के कण स्वयं गरम होकर दूसरे कण को गरम नहीं करते। प्रत्युत वहां से हट जाते हैं। उनके स्थान पर दूसरे कण आते हैं, वे गरम होकर हट जाते हैं। उनके स्थान पर तीसरे कण समूह आते हैं। वाहन क्रिया में एक कण, गरम होकर पड़ोसी कण को गरम करता है और जबकि परिवहन में प्रत्येक कण अग्निस्रोत के पास आता है और गरम होता है।

तीसरी क्रिया प्रसारण है। इस क्रिया द्वारा ताप सीधा पदार्थ तक पहुंचता है। बीच के माध्यमों को अछूता छोड़ देता है। जैसे सूर्य की किरण से पृथिवी गरम होती है। सूर्य की किरणें पृथिवी तक पहुंचने से पहले वायु के संसर्ग में आती हैं, परन्तु वायु को गरम नहीं करतीं। अतः वायु के स्पर्श से पृथिवी गरम नहीं होती । सूर्य की किरणों से पृथिवी पहले गरम होती है। गरम पृथिवी के संसर्ग से वायु गरम होती है। अगर ऐसा न होता तो वायुमण्डल की वायु पहले गरम होती, पृथिवी बाद में । गरम पृथिवी के ऊपर भी ठण्डी वायु बहती है । कारण कि पृथिवी के ताप से वायु गरम होती है।

अग्नि पावक है, शोधक है। सोने को गरम कर उसकी मिलावट को दूर कर शुद्ध किया जाता है। लोहे का जंग भी लोहे को गरम कर दूर किया जाता है।

जो चमचमाते बर्तन घरों में दिखाई देते हैं वे विभिन्न धातुओं को गरम कर, पिघलाकर मिलाने से और पुनः ठण्डा करने से एक नई धातु (संकर) का निर्माण होता है । जैसे तांबा और जस्ता से पीतल एवं लोहे और निकल से स्टील बनता है ।

दृढ़, ठोस पदार्थ अग्नि संसर्ग से गरम होकर नरम हो जाते हैं। और अधिक गरम करने पर धातु पिघलते हैं। द्रव के समान बहने लगते हैं। इस पिघली धातु को विभिन्न सांचों में डालकर विभिन्न आकार के कल–पुर्जे बनाए जाते हैं ।

लोहे को गरम करके पानी में डालने से फौलाद बनता है। इसकी तलवारें प्रसिद्ध हैं। कल–कारखानों के मजबूत पुर्जे भी फौलाद के बनाए जाते हैं। तलवार की धार भी इसी प्रकार पक्की बनाई जाती है। तलवार को विशेष अंश (डिग्री) तक गरम करकें–तुरन्त, गरम अवस्था में ही–कुछ निश्चित क्षण, पानी में रखा जाता है। तब तलवार फौलाद के समान दृढ़ बनती है, जो टूट सकती है परन्तु मुड़ती नहीं ।

इसी प्रकार द्रवों को अधिक गरम किया जाय तो वे गैस (वायु). रूप धारण करते हैं। जैसे जल का भाप और गैसों को ठण्डा करके द्रव बनाया जाता है जैसे अमोनियम गैस से रेफ्रीजरेटर चलता है। अग्नि स्फोटक है। अग्नि में डाले गए कुछ पदार्थ– वनस्पतियां, औषधियां, घृत आदि–अपने मूल रूप, सूक्ष्म तत्त्वों में फूटते हैं। पौष्टिक पदार्थों का पुष्टि तत्त्व, वायुमण्डल को पौष्टिक बनाता है। औषधियों का मूलतत्त्व वायुमण्डल को स्वास्थ्यवर्धक, सुगन्धित पदार्थों की सुगन्ध से सुवासित एवं मिष्ट पदार्थों के माधुर्य से मधुर बनता है। अतः अग्निहोत्र में सुगन्धित, मिष्ट, पौष्टिक और रोगनाशक चार प्रकार के पदार्थों से आहुति प्रदान की जाती है। दूसरी ओर अग्नि की विस्फोटक शक्ति से अणु के विस्फोट से भयंकर दुष्परिणाम दिखाई देते हैं।

अग्नि स्फोटक होने के साथ–साथ वाहक भी है। ''अग्नौ प्रास्ताहुतिस्तावद् आदित्यमुपतिष्ठते''। अग्नि में डाली गई आहुति, शाकल्य पदार्थ, सूक्ष्म रूप पाकर, द्युलोक तक पहुंचती हैं। वे पदार्थ अपने गुणों से वहां के वायुमण्डल को प्रभावित करते हैं।

अग्नि अन्य छह रूपों में प्राणियों के शरीर में विद्यमान है।

वे हैं–तेज, ओज, वीर्य, बल, मन्यु और सह।

सद्विचार एवं सच्चरित्र का जो प्रभाव मुखमण्डल पर दिखाई देता है, वह ''तेज'' है। वाणी का प्रभाव ''ओज''है । आक्रमण करते समय "वीर्य" काम आता है। दूसरे द्वारा किए गए आक्रमण को संभालने के लिए ''बल'' की आवश्यकता है। परहित की भावना से प्रेरित, विचार पूर्वक किया गया क्रोध ''मन्यु'' कहलाता है। शारीरिक और मानसिक कष्ट सहन कर पाने की शक्ति का नाम ''सह'' है। ये छह रूप भौतिक अग्नि के हैं और अग्निस्वरूप परमात्मा के भी हैं। उस परमात्मा से इन गुणों को पाने के लिए मनुष्य इन्हीं नामों से प्रार्थना करता है ।

भौतिक अग्नि के इस समग्र स्वरूप को जानने वाला मनुष्य जब उस अग्नि का चिन्तन, मनन, दर्शन करता है, जो इस अग्नि का चक्षु अर्थात् प्रदर्शक एवं नियन्ता है तो वह आत्मविभोर होता है। उसके हृदय से निकलता है– चित्रं देवानाम् उदगाद् अनीकम्। चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः।

उपासक का दर्शन और गहरा है। वह उस मित्र, वरुण और अग्नि के चक्षुरूप ''पर ब्रह्म'' को तीनों लोकों में विद्यमान ही नहीं, परिपूर्ण रूप से व्याप्त जानने लगता है। तब अनायास पुकारता है–

आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम् ः

अर्थ–वह परब्रह्म, आदि एवं विचित्र शक्ति, द्युलोक, पृथिवी लोक और अन्तरिक्ष लोक अर्थात् प्रकाश लोक, प्रकाश्य लोक और इनके मध्य स्थित अन्य लोकों को रचकर धारण करता हुआ रक्षा कर रहा है । इसे निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

एक विद्वान् से मिलने हम उसके घर जाते हैं। वे सज्जन बैठे स्वाध्याय कर रहे हैं। हम अपने प्रश्नों का उत्तर लेकर आ जाते हैं। एक दूसरे विद्वान् के घर जाते हैं। प्रवेश करते ही हमें अनुभव होने लगता है कि यह व्यक्ति इस कमरे में पूर्णतया व्याप्त है। उसके कमरे में चारों ओर अल्मारियों में अनेकों शास्त्र, क्रम से पड़े हैं, साफ सुथरे हैं। प्रतिदिन धूल झाड़ी जाती है। पढ़ने के बाद पुस्तक अपने नियत स्थान पर रखी जाती है। उसकी अपनी रची पुस्तकें भी नियत स्थान पर व्यवस्थित पड़ी हैं। उसके कमरे में दो एक चित्र प्रकाण्ड विद्वानों तथा ऋषियों में से किसी के बड़े सलीके से दीवार पर लगे हैं। इन व्यवस्थाओं से प्रभाव पड़ता है कि यह विद्वान् इस कमरे में पूर्णतया व्याप्त होकर इसको व्यवस्थित कर रहा है। इसी प्रकार एक चित्रकार के घर जाकर देखते हैं। वह अपने में चारों ओर अपनी कृतियों से पूर्ण हो रहा है। उसके बनाए ऋषियों के भव्य चित्र, मनोहारी प्राकृतिक दृश्यों के चित्र, विविध भावनाओं– करुणा, रौद्र, क्रोध, जुगुप्सा, श्रृंगार, वीर आदि–को स्पष्ट अभिव्यक्त करने वाले अनेक चित्र हैं। कुछ दीवारों पर लगे हैं। कुछ मेज पर, कुछ तख्त पर, कुछ सोफा पर पड़े हैं। कुछ पूरे है, कुछ अधूरे हैं, कुछ को अभी रेखांकित ही किया है पर सभी सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित हैं। उस चित्रकार से कुछ पूछने की आवश्यकता नहीं। कमरा स्वयं बोल रहा है। चित्रकार का स्वभाव, गुण और हृदय के भाव चित्रों के माध्यम से स्वयं ही बोल रहे हैं। हम अनुभव करते हैं कि यह चित्रकार चित्रों को रचकर, धारण कर इस कमरे में पूर्णतया परिपूर्ण है, व्याप्त है। यह कमरा उस चित्रकार के स्वरूप का जीवन्त रूप है।

ऐसे ही शिल्पी का घर, शिल्पी द्वारा निर्मित वस्तुओं से, बढ़ई का घर काष्ठ के विविध फर्नीचर, खिलौनों से मूर्तिकार का घर विविध प्रकार की मूर्तियों से जीवन्त प्रतीत होता है। ये सभी कलाकार अपनी रचित कलाकृतियों के माध्यम से अपने घर में चारों ओर से परिपूर्ण हो रहे हैं । अनुप्राणित कर रहे हैं, व्याप रहे हैं।

इसी प्रकार उपासक को ब्रह्म का व्यापक रूप, ब्रह्म द्वारा निर्मित सृष्टि, उसके धारण (नियन्त्रण) और रक्षण द्वारा तीनों लोकों में परिपूर्ण हो रहा, प्रतीत होता है।

उपासक की दृष्टि में उस परब्रह्म (जगदीश्वर) का विशाल रूप अनोखे प्रकार से प्रकट होता है, तब कह उठता है–

आ प्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षम्।

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।

अर्थ–चराचर जगत् के आत्मा रूप यह सूर्य (प्रेरक एवं उत्पादक) परब्रह्म है।

जगत् के प्राणवान् पदार्थों के दो रूप हैं–चर और अचर। मनुष्य, पशु–पक्षी आदि जो चलते–फिरते गतिशील हैं, वे चर कहलाते हैं तथा वनस्पतियां, पेड़–पौधे आदि जो पृथिवी पर एक स्थान ही विद्यमान रहते हैं, इधर–उधर गति नहीं करते, वे अचर कहाते हैं। परन्तु ये अचर, मनुष्य के समान, जन्म, कुमार, वार्धक्य, (वृद्धि फिर क्षीणता) अवस्थाओं में से गुजरते हुए अन्त में मृत्यु को प्राप्त करते हैं। इन दोनों प्रकार के पदार्थों में वह सर्वव्यापक सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक सूर्य (परब्रह्म) इस प्रकार से विद्यमान है जैसे इन चराचर पदार्थों में आत्मा विद्यमान होता है ।

शरीर में चेतना, आत्मा के प्रवेश के साथ आरम्भ होती है। तभी वह सोचता है, संकल्प करता है, सुख– दुःख का अनुभव करता है। राग–द्वेष करता है। ग्रहण व त्याग करता है। पुण्य या पाप करता है। मरता है या मारा जाता है। भूख–प्यास, कामनाएं तभी होती हैं, जब शरीर में आत्मा है। आत्मा के चले जाने पर न रोता है, न हंसता है, न क्रोध करता है, न प्यार करता है। यही दर्शन परब्रह्म (आदि शक्ति) के विषय में, जगत् के चराचर चेतन पदार्थों में हैं। मित्र, वरुण, अग्नि रूप में द्युलोक, पृथिवीलोक और अन्तरिक्ष लोक के सभी चराचर पदार्थों में वह ऐसे विद्यमान हैं, जैसे शरीर में आत्मा। ये समस्त पदार्थ लोक–लोकान्तर, विद्युत वायु, सूर्य आदि शक्तियां, उसी की शक्ति से अनुप्राणित हैं। उसी के नियन्त्रण, निर्देशन और नियमों

में आबद्ध हैं। जैसे चलता–फिरता शरीर आत्मा की अनुभूति कराता है, इसी प्रकार गतिशील चराचर जगत् परमात्मा (सूर्य) की अनुभूति कराता है।

परब्रह्म के इस विराट् दर्शन के अनन्तर साधक स्वयं अपने से कहता है–

स्वाहा–

अर्थात् यह मेरा अपना दर्शन है। जैस मेरी बुद्धि में सत्य ज्ञान है, वैसा ही कोमल एवं मधुर वाणी से समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए, स्पष्ट रूप से परिमार्जित करके कहता हूं। मैंने इस प्रकार के दर्शन को प्राप्त करने के लिए स्वयं घोर श्रम किया है और इन स्व अर्जित अपनी समस्त अभिलाषाएं, कामनाएं, समस्याएं उस परब्रह्म को समर्पित करता हूं।

अर्थात् इस स्वरूप का मैंने वस्तुतः दर्शन किया है। जैसा देखा है, वैसा ही बताता हूं। समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए कोमल एवं मधुर वाणी में बताता हूं। यह ज्ञान अब मेरा अपना, स्व अर्जित ज्ञान है। इसे मैंने अत्यधिक परिश्रम से प्राप्त किया है। इसे स्पष्ट रूप से एवं परिमार्जित कर बता रहा हूं।

नोट– स्वाहा शब्द के निम्न अर्थ हैं–

(१) सु +आह — सु कोमल, मनोहारी, कल्याणकारी, मधुर प्रिय वचन बोलता हूं ।

(२) स्वा (वाग)+आह — मेरी बुद्धि में जैसा ज्ञान है, मैं वैसा ही वाणी द्वारा कहता हूं। सत्य मानता हूं, कहता हूं।

(३) स्व+प्र+आह — अपनी वस्तु को ही अपना कहता हूं। अस्तेय और अपरिग्रह का पालन करता हूं।

(४) सु+आ+ह — आ–चारों दिशाओं में सम्यक् श्रम से प्राप्त पदार्थों को सु–शोधन करके हु–आहुति प्रदान करता हूं। अर्थात् अपने श्रम से प्राप्त पदार्थों का दान उन पदार्थों को शुद्ध करने के बाद, करता हूं। पराई वस्तु एवम् अशुद्ध तथा निकृष्ट वस्तु का दान नहीं करता।

तीनों मन्त्रों का सारांश–

पहले उपस्थान मन्त्र में जगदीश्वर के पृथक् दर्शन सूर्य (ज्योतिस्वरूप) में हुए हैं। यह दर्शन आस्थावान् मनुष्य को ऐसे सुलभ होते हैं, जैसे विरल से घने माध्यम में आने पर सूर्य की किरण नीचे की ओर झुक जाती है। साधक को इस ज्योतिः स्वरूप सर्वप्रकाशक के दर्शन प्रत्येक वस्तु में होने लगते हैं। तीसरे मन्त्र में वह प्रकाशस्वरूप परब्रह्म, अद्वितीय शक्ति (ऊर्जा) के रूप में प्रकट होता है। वह मित्र, वरुण और अग्नि जैसे सर्वशक्तिसम्पन्न का भी प्रेरक, मार्गदर्शक एवं नियन्ता है। वह द्यु, अन्तरिक्ष और पृथिवी लोकों को पूर्ण कर धारण और रक्षण कर रहा है । वह समस्त चराचर जगत् का आत्मा है।

भक्त साधक, ज्ञान से, मनन से और वाणी से इस सत्य दर्शन का प्रकाशन करता है। वही शक्ति, साधक को सत्य पर दृढ़ रहने के लिए–आत्मोत्सर्ग तक के लिए–अदम्य शक्ति प्रदान करती है।

■■■

सूचना -पत्रिका शुल्क

माननीय सदस्यों व पाठकों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका ''अमृत पथ'' निरन्तर आप तक पहुंच रही है। जिन सदस्यों का शुल्क समाप्त हो चुका है उनसे निवेदन है कृपया शुल्क का चैक/मनीऑर्डर ''आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड'' के नाम से सभा के मुख्य कार्यालय–आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, आर्य समाज मन्दिर धामावाला, देहरादून–248001 पर अविलम्ब भेजने का कष्ट करें। आप शुल्क की राशि NEFT/RTGS द्वारा अथवा सीधे बैंक अकाउण्ट नं. 06492010012620, IFSC कोड PUNB0000210 पंजाब नैशनल बैंक, 17, सकलानी मेन्शन, के सामने गांधी पार्क, राजपुर रोड, देहरादून – 248001 में भी जमा करवा सकते हैं, जिसकी सूचना मो. नं. 9997126418 अथवा ई–मेल: aryapsuk@gmail.com पर दी जा सकती है।

आओ स्मरण करें महान पुरुषों को.....

शहीद भगत सिंह : जन्म 24 सितम्बर 1906-बलिदानः 23 मार्च 1931

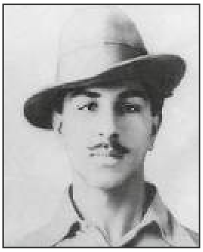

भगत सिंह का जन्म 24 सितम्बर 1906 (अश्विन कृष्णपक्ष सप्तमी) को प्रचलित है परन्तु तत्कालीन अनेक साक्ष्यों के अनुसार उनका जन्म 27 सितम्बर 1907 ई० को एक सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। यह एक किसान परिवार से थे। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियावाला बाग हत्याकांण्ड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आज़ादी के लिए **नौजवान भारत सभा** की स्थापना की थी।

वर्ष 1922 में चौरी-चौरा हत्याकांड के बाद गांधी जी ने जब किसानों का साथ नहीं दिया तब भगत सिंह बहुत निराश हुए। उसके बाद उनका अहिंसा से विश्वास कमजोर हो गया और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सशस्त्र क्रांति ही स्वतंत्रता दिलाने का एक मात्र रास्ता है। उसके बाद वह चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में गठित हुई गदर दल के हिस्सा बन गए। काकोरी काण्ड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रान्तिकारियों को फांसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्र हुए कि चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था।

1982 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए भयानक प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में भाग लेने वालों पर अंग्रेजी शासन ने लाठी चार्ज भी किया। इसी लाठी चार्ज से आहत होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई। अब इनसे रहा न गया। एक गुप्त योजना के तहत इन्होंने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट स्काट को मारने की योजना सोची। भगत सिंह ने सुखेदव और राजगुरू के साथ मिलकर 17 दिसम्बर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधिक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जे.पी. सांडर्स को मारा था। इस कार्यवाही में क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद ने उनकी पूरी सहायता की थी। क्रान्तिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने वर्तमान नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेण्ट्रल एसेम्बली के सभागार संसद भवन में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम और पर्चे फेंके थे। बम फेंकने के बाद वहीं पर दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी। 7 अक्टूबर 1930 को अदालत के द्वारा 68 पृष्ठों का निर्णय दिया, जिसमें भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरू को फांसी की सजा सुनाई गई। 23 मार्च 1931 को शाम में करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरू को फांसी दे दी गई। फांसी पर जाते समय वे तीनों मस्ती से गा रहे थे-

मेरा रंग दे बसन्ती चोला, मेरा रंग दे।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला, मेरा रंग दे बसन्ती चोला।।

शहीदों को शत् शत् नमन

■■■

महात्म गाँधी जी: जन्म 2 अक्टूबर 1869: स्मृति 30 जनवरी 1948

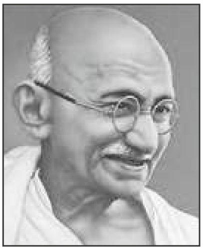

मोहनदास करमचन्द गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता राजकोट के दीवान थें। उनकी माता एक धार्मिक महिला थीं। स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लेने और देश को स्वतंत्र कराने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका के कारण राष्ट्रपिता कहा गया। यह उपाधि सर्वप्रथम उन्हें नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने दी। महात्मा गांधी मैट्रिक पास करने के पश्चातृ इंग्लैण्ड चले गए जहां उन्होंने न्यायशास्त्र का अध्ययन किया। इसके बाद इन्होंने अधिवक्ता के रूप में कार्य प्रारम्भ कर दिया। वह भारत एक बैरिस्टर बनकर वापस आए और मुम्बई में अधिवक्ता के रूप में कार्य करने लगे।

महात्मा गाँधी को उनके एक भारतीय मित्र ने कानूनी सलाह के लिए दक्षिण अफ्रीका बुलाया। यही से उनके राजनैतिक जीवन की शुरूआत हुई। दक्षिण अफ्रीका पहुंचकर गांधी जी एक अजीब प्रकार का अनुभव हुआ। उन्होंने वहां देखा कि किस प्रकार से भारतीयों के साथ भेद-भाव किया जा रहा है। एक बार गांधी जी को स्वयं एक गोरे ने ट्रेन से उठाकर बाहर फेंक दिया क्योंकि गांधीजी उस समय प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहे थे जब कि उस श्रेणी में केवल गोरे यात्रा करना अपना अधिकार समझते थे। गांधीजी ने तभी प्रण लिया कि वह काले लोगों और भारतियों के लिए संघर्ष करेंगे। उन्होंने वहां रहने वाले भारतीयों के जीवन सुधार के लिए कई आन्दोलन किये। दक्षिण अफ्रीका में आन्दोलन के दौरान उन्हें सत्य और अहिंसा का महत्व समझ में आया।

जब वह भारत वापस आए तब उन्होंने वहीं स्थिति यहां पर देखी जो वह दक्षिण अफ्रीका में देखकर आए थे। 1920 में उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया और अंग्रेजों को ललकारा। 1930 में उन्होंने असहयोग आन्दोलन की स्थापना की और 1942 में भारत उन्होंने अंग्रेजों से भारत छोड़ने का आह्वान किया।

अपने इन आन्दोलन के दौरान वह कई बार जेल गए। अन्तत: उन्हें सफलता हाथ लगी और 1947 में भारत आजाद हुआ। नाथुराम गोडसे ने 30 जनवरी 1948 को गोली मारकर महात्मा गांधी की हत्या कर दी जब वह संध्या प्रार्थना के लिए जा रहे थे।

सरदार वल्लभ भाई पटेल : जन्म 31 अक्टूबर 1875: स्मृति 15 दिसम्बर 1950

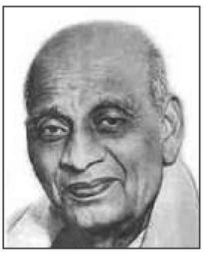

सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नाडियाड में उनके ननिहाल में हुआ। वे खेड़ा जिले के करमसद में रहने वाले झावेर भाई पटेल की चौथी संतान थे। उनकी माता का नाम लाडबा पटेल था। उन्होंने प्राइमरी शिक्षा करमसद से ही प्राप्त की। उनकी शिक्षा का मुख्य स्त्रोत स्वाध्याय था। उन्होंने लंदन से बैरिस्टर की पढ़ाई की और उसके बाद भारत आकर अहमदाबाद में वकालत शुरू की। सरदार पटेल ने महात्मा गांधी से प्रेरित होकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया था। उनके द्वारा इस लड़ाई में अपना पहला योगदान खेड़ा संघर्ष में दिया गया, जब अंग्रेज सरकार से कर में छूट देने की मांग की और किसानों का नेतृत्व किया। अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा और किसानों को राहत दे दी गई।

सरदार पटेल को सरदार का नाम, बारडोली सत्याग्रह के बाद मिला, जब बारडोली कसबे में सशक्त सत्याग्रह करने के लिए उन्हें पहले बारडोली का सरदार कहा गया बाद में सरदार उनके नाम के साथ ही जुड गया। आज़ादी के बाद अधिकतर प्रांतीय समितियां सरदार पटेल के पक्ष में थीं। गांधी जी की इच्छा के अनुसार खुद को प्रधान मंत्री पद की दौड़ से दूर रखा और नेहरू को समर्थन दिया। बाद में उन्हें उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री का पद सौंपा गया, जिसके बाद उनकी पहली प्राथमिकता देसी रियासतों को भारत में शामिल करना था। इस कार्य को उन्होंने बखूबी किया जिसमें हैदराबाद में सेना का ऑपरेशन पोलो भी था। क्योंकि भारत के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था, इसलिए उन्हें भारत का लौहपुरूष कहा गया। 15 दिसम्बर 1950 को उनकी मृत्यु हो गई और यह लौहपुरूष दुनिया को अलविदा कह गया।

■■■

अशफाकुल्लाह खान: जन्म 22 अक्टूबर 1900: स्मृति 19 दिसम्बर 1927

अशफाकुल्लाह खान का जन्म ब्रितानी भारत के शाहजहांपुर में शफ़िकुल्लाह खान और मज़रूनिस्सा के घर हुआ। वो एक मुस्लिम पठान परिवार के खैबर जनजाति के थे। वे छः भाई बहनों मे सबसे छोटे थे।

वर्ष 1920 में महात्मा गांधी ने भारत ब्रितानी शासन के विरूद्ध असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया। लेकिन वर्ष 1992 में चौरी कांड के बाद महात्मा गांधी ने आन्दोलन वापस लिया।

इस स्थिति में खान सहित विभिन्न युवा लोग खिन्न हुये। इसके बाद खान ने समान विचारों वाले स्वतंत्रता सेनानियों से मिलकर नया संगठन बनाने का निर्णय लिया और वर्ष 1924 में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन किया।

अपने आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए हथियार खरीदने और अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक गोलाबारूद इकट्ठा करने के लिए हिन्दुस्तानी सोशिलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सभी क्रान्तिकरियों ने शाहजहांपुर में 8 अगस्त 1925 को एक बैठक की। एक लम्बी विवेचना के पश्चात् रेलगाड़ी में जा रहे सरकारी खजाने के लूटने का कार्यक्रम बना। 9 अगस्त 1925 को खान सहित उनके क्रान्तिकारी साथियों राम प्रसाद 'बिस्मिल, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह, शचीन्द्रनाथ बख्शी, चन्द्रशेखर आज़ाद, केशव चक्रवर्ती, बनवारी लाल, मुरारी शर्मा, मुकुन्दी लाल और मन्मथनाथ गुप्त ने मिलकर लखनऊ के निकट काकोरी में रेलगाड़ी में जा रहा ब्रितानी सरकार का खजाना लूट लिया।

रेलगाड़ी के लूटे जाने के एक माह बाद भी किसी भी लुटेरे की गिरफ्तारी नहीं हो सकी। यद्यपि ब्रिटेन सरकार ने एक विस्तृत जांच का जाल आरम्भ कर दिया था। 26 अक्टूबर 1925 की एक सुबह, बिस्मिल को पुलिस ने पकड़ लिया और खान अकेले थे जिनका पुलिस कोई सुराख नहीं लगा सकी। वो छुपते हुये बिहार से बनारस चले गये, जहां उन्होंने दस माह तक एक अभियांत्रिकी कंपनी में काम किया। वे अभियान्त्रिक के आगे के अध्ययन के लिए विदेश में जाना चाहते थे जिससे स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाया जा सके और वो देश छोड़ने के लिए दिल्ली चले गये। उन्होंने अपने एक पठान दोस्त की सहायता ली जो पहले उनका सहपाठी रह चुका था। दोस्त ने उन्हें धोखा देते हुये उनका ठिकाना पुलिस को बता दिया और 17 जुलाई 1926 की सुबह पुलिस उनके घर आयी तथा उन्हें गिरफ्तार किया।

खान को फैज़ाबाद कारावास में रखा गया और उनके विरूद्ध एक मामला आरम्भ किया गया। उनके भाई रियासतुल्लाह खान उनके कानूनी अधिवक्ता थे। कारावास के दौरान अशफाकुल्लाह खान ने कुरान का पाठ किया और नियमित तौर पर नमाज़ पढ़ना आरम्भ कर दिया तथा इस्लामी माह रमज़ान में कठोरता से रोजे रखना आरम्भ कर दिया। काकोरी डकैती का मामला बिस्मिल, खान राजेन्द्र लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को फांसी की सजा सुनाकर पूरा किया गया।

■■■

लाल बहादुर शास्त्री जी: जन्म 2 अक्टूबर 1904: स्मृति 11 जनवरी 1966

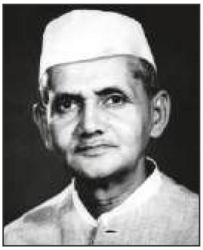

लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को मुगलसराय के एक सामान्य परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री शारदाप्रसाद श्रीवास्तव एक साधारण अध्यापक थे। वे एक आदर्श शिक्षक होने के साथ-साथ सहृदय एवं उदार चरित्र के व्यक्ति थे, जिनका प्रभाव लालबहादुर पर गहरे रूप से पड़ा। पिता की आकस्मिक मृत्यु हो जाने पर अल्पआयु में ही उन्हें आर्थिक बोझ का सामना करना पड़ा। मां रामदुलारी ने लालबहादुर में स्वाभिमान की भावना ऐसी कूट-कूट कर भरी थी कि एक बार 12 वर्ष की अवस्था में अपने साथियों के साथ गंगा पर मेला देखने गए लालबहादुर जब लौटने लगा तो उनके पास पैसे नहीं थे। उन्होंने अपने साथियों को यह बात नहीं बताई। वे यह कह कर किनारे रूक गए कि वे बाद में आएंगे। सब मित्रों के चले जाने के बाद उन्होंने गंगा का चौड़ा तट तैरकर पार किया।

हाई स्कूल की परीक्षा हरिश्चंद्र स्कूल वाराणसी से पूर्ण की। 1921 में गांधी जी के साथ असहयोग आन्दोलन में शामिल हुए। काशी विद्यापीठ से बी ऐ की उपाधि प्राप्त करने के बाद अपने नाम के आगे बी ऐ न जोड़कर शास्त्री जोड़ लिया, ताकि इससे भारतियता की पहचान हो। इसके बाद अपने साथियों के साथ लाला लाजपत राय की पीपुल्स पार्टी में शामिल होकर प्रथम कार्य हरिजन उद्धार का किया। फिर लोक सेवक संघ के आजीवन सदस्य बन गए। इलाहाबाद में वे कांग्रेस कमेटी के महासचिव तथा 1930-36 तक अध्यक्ष रहे। उनके संगठन व कार्यक्षमता ने उन्हें बड़े-बड़े नेताओं की श्रेणी में ला खड़ा किया। 1940 में शासन विरोधी गतिविधियों के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। शास्त्री जी की कर्तव्यनिष्ठा और योग्यता के देखते हुए 1951 में प्रधान मंत्री नेहरू ने उन्हें कांग्रेस का महासचिव बनाया।

भारत के गणतंत्र के लागू होने के बाद उन्हें रेल तथा परिवहन मंत्री बनाया गया। उन्होंने छोटे-छोटे स्टेशनों का निर्माण करवाया। हजारों मील लम्बी रेल लाइनें बनवायीं। इंजन, मालगाड़ी तथा सवारी गाड़ियों के वर्कशॉप बनाये। 1952 में आरियालूर रेल दुर्घटना को अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानते हुए उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। 1956-57 में उन्हें संचार एवं परिवहन मंत्री का कार्य सौंपा गया। इसके बाद वे वाणिज्य और उद्योग विभाग के मंत्री भी बनाये गए। 1964 में नेहरू जी के निधन के बाद प्रधान मंत्री का पद संभाला। 1965 के पाकिस्तान के साथ युद्ध में भारत को विजय दिलाई और ''जय जवान जय किसान'' का नारा दिया। 11 जनवरी 1966 को ताशकंद में पाकिस्तान के साथ समझौता करने के बाद रहस्मय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी सादगी, देश-भक्ति और ईमानदारी के लिए मरणोपरान्त भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

■■■

समाचार

आर्यसमाज हल्द्वानी जनपद–नैनीताल की 2025–26 की कार्यकारिणी का गठन दिनांक 6 जुलाई 2025 को पूर्ण लोकतान्त्रिक प्रक्रिया का अनुपालन करते हुए होगया। चुनाव प्रक्रिया का संचालन चुनाव अधिकारी के रूप में श्री राजकुमार राजौरिया जी (कार्यालय अधीक्षक)ने किया।

वर्तमान कार्यकारिणी–

प्रधान– (डॉ)विनय खुल्लर जी

वरिष्ठ उपप्रधान– श्री हरीशचन्द्र पन्त जी

उपप्रधान– श्री अरविन्द मलिक जी।

महिला उपप्रधान– श्रीमती ढालकुमारी शर्मा जी।

मन्त्री– प्रो॰(डॉ) विनय विद्यालंकार, प्राचार्य जी, राजकीय महाविद्यालय बेतालघाट, नैनीताल

उपमन्त्री– श्री यमुनादत्त बेलवाल जी।

कोषाध्यक्ष– श्री विनोद कुमार आर्य जी

लेखा निरीक्षक– श्री अनुजकान्त खण्डेलवाल जी,

पुस्तकालयाध्यक्ष– श्रीमती कृष्णा आर्या जी।

अन्तरंग सदस्य–1–श्री कृष्णकान्त जी।

2– श्री रविकान्त माहेश्वरी जी

इस समाज में पूर्वतः संरक्षक मण्डल भी है–

श्रीमती कान्ता विनायक जी

श्री पी एल आर्य जी।

श्री हरिप्रसाद आर्य जी।

निर्विवाद रूप से गठन के उपरान्त सभी पदाधिकारियों ने सभी मान्य सभासदों व आर्यजनों का आभार व्यक्त करते हुए आगामी वर्ष की कार्ययोजना प्रस्तुत की।

ओ३म्

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकता, दानवीर तथा आर्य समाज मन्दिर धामावाला देहरादून के पूर्व प्रधान श्री हर्षवर्धन आर्य जी का दिनांक 7.06.2025 को देहरादून में आकस्मिक निधन हो गया। श्री हर्षवर्धन आर्य जी ने अपना जीवन पूर्णतः महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए आर्य समाज को समर्पित किया और वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए निरन्तर कार्य करते रहे। वे आर्य समाज मन्दिर धामावाला, फ्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम तथा रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कॉलेज के कई वर्षो तक प्रधान रहे। उन्होंने आर्य समाज मन्दिर धामावाला के कई पदों को सुशोभित किया। उनके जाने से परिवार एवं आर्य जगत को जो हानि हुई है उसकी पूर्ति निकट भविष्य में असंभव है। आदरणीय श्री हर्षवर्धन जी का समाज के प्रति जो समर्पण, स्नेह, सहानुभूति, योगदान व सहयोग रहा है उसे भुलाया नहीं जा सकता। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के सभी सदस्यों की ओर से दिवंगत आत्मा को भावपूर्ण श्रद्धांजलि और शत शत नमन।

ईश्वर से प्रार्थना है दिवन्गत आत्मा को अपनी व्यवस्थानुसार सद्गति प्रदान करें और शोकाकुल परिवारजनों को इस दुःख की घड़ी में धैर्य, शक्ति व साहस दें

ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः

उपनिषदों की कहानियां

गतांग से आगे ...

पंचाग्नि–विद्या

कहते हैं कि एक बार आरूणि का पुत्र श्वेतकेतु पांचालों की राज्य सभा में गया। वहां पांचालों के राजा जय बलि प्रवाहण ने उस से पूछा कि हे कुमार! क्या आपके पिता ने आपको कुछ शिक्षा दी है?

उत्तर में कुमार ने कहा –''जी हां, दी है।'' राजा–मरने के बाद यह जीव ऊपर जिस स्थान को जाते हैं, क्या आप उसे जानते हैं? श्वेतकेतु–हे राजन मैं नहीं जानता। राजा–जैसे वे फिर लौटकर आते हैं, क्या आप उसे जानते हैं? श्वेतकेतु– हे राजन मैं नहीं जानता। राजा क्या तुम्हें मालूम है कि देव–यान और पितृ–यान के मार्ग कहाँ अलग–अलग होते हैं? श्वेतकेतु–हे राजन मैं नहीं जानता। राजा–मरने के बाद यहां से सब लोग जहां जाते हैं, वह लोक भर क्यों नहीं जाता? क्या आप इस बात को जानते हैं? श्वेतकेतु–हे राजन मैं नहीं जानता। राजा–पांचवीं आहुति में जल जीववाचक किस प्रकार हो जाते हैं? क्या आप इस रहस्य को जानते हैं?

श्वेतकेतु–हे राजन मैं नहीं जानता। राजा–फिर आप ने यह क्यों कहा कि मुझे शिक्षा मिली है? जो इन बातों को भी नहीं जानता जोकि मैंने पूछी हैं, वह यह कैसे कह सकता है कि मैं शिक्षा प्राप्त कर चुका हूं।

इस पर श्वेतकेतु को भरी सभा में लज्जित होना पड़ा। वह वहां से वापिस अपने पिता के आश्रम में चला गया। वहां जाकर उसने कहा–

"पिता जी! आपने पूरी शिक्षा दिये बिना ही मुझ से कह दिया कि मैंने तुझे पूरी शिक्षा दे दी है, इसका क्या कारण है? उस घमण्डी राजा ने मुझ से पांच प्रश्न पूछे थे, परन्तु मैं उस के किसी एक प्रश्न का भी उत्तर न दे सका।''

राजा के पांच प्रश्न भी श्वेत केतु ने अपने पिता को सुना दिये। उस को सुनकर उसके पिता ने कहा रू– 'वत्स! राजा के जो पांच प्रश्न तूने मुझे बतलाये हैं, उनके उत्तर तो मैं स्वयं भी नहीं जानता। यदि इनके विषय में मुझे कुछ जानकारी होती, तो वह मैं तुझे क्यों न बताता? तू जो पूरी शिक्षा न देने की शिकायत करता है, वह उचित नहीं है। जो कुछ मैं जानता हूं, वह सब मैं तुझे बता चुका हूं।''

इस के बाद श्वेतकेतु के पिता गौतम आरूणि ने आश्रम से प्रस्थान किया। लम्बी यात्रा को समाप्त करके वह पांचाल नरेश जयबलि प्रवाहण की राज्यसभा में जा पहुंचा। जब राजा को उस सुप्रसिद्ध विद्वान् के आगमन का समाचार मिला, तब उसने गौतम आरूणि का यथोचित आदर–सत्कार किया। दूसरे दिन गौतम आरूणि राजदरबार में उपस्थित हुए। राज की ओर से वहां भी उन का उचित आदर–सम्मान किया गया।

दोनों ओर के शिष्टाचार के पश्चात् राजा ने कहा रू–''हे गौतम! धन की आवश्यकता तो सभी लोगों को होती है। आप को कितने धन की आवश्यकता है? यह बतलाने की कृपा कीजिये। आप जितना धन मांगेंगे, उतना ही मैं दे दूंगा।''

उत्तर में गौतम ने कहा :–

''हे राजन! आपका धन आप के लिये कल्याणकारी हो। वह आपके ही पास रहे। मुझे धन की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। कुमार श्वेतकेतु के यहां आने पर आपने उससे जो पांच प्रश्न पूछे थे, मैं तो केवल उन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने का ही इच्छुक हूं और कुछ भी मुझे नहीं चाहिये।''

गौतम की बात को सुन कर राजा को बहुत अधिक खेद हुआ। वह बहुत उदास हो गया। कुछ समय तक वह विचार मग्न होकर बैठा रहा। फिर बोलाः–

''गौतम जी! आप के अनुरोध को मैं स्वीकार करता हूँ। उन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिये आप को कुछ समय तक यहां पर ही निवास करना होगा। समय आने पर उन प्रश्नों के समाधान मैं आपकी सेवा में प्रस्तुत करूंगा। मैं ने कुमार श्वेतकेतु से जिस विद्या के विषय में वे प्रश्न पूछे थे, वह विद्या अब तक किसी भी ब्राह्मण को ज्ञात नहीं हैं। अब, आप

ही वे सर्वप्रथम ब्राह्मण हैं, जो मुझसे इस विद्या को प्राप्त करेंगे। अब तक तो यह विद्या क्षत्रियों के पास ही सुरक्षित है। क्षत्रियों को ही उसके उपदेश का अधिकार है।''

विचार–

यह छान्दोग्योपनिषद् के तीसरे खण्ड की कथा है। इस कथा का सिलसला और भी आगे चलता है। मरने के बाद क्या होता है? पैदा होने के लिये जीव कहां से आता है? इन, और ऐसे ही अन्य प्रश्नों पर इस कथा में आगे बहुत उत्तम प्रकाश डाला गया है। उस सम्पूर्ण प्रसंग को हम विवेचन सहित अगले लेख में प्रस्तुत कर रहे हैं। इस से पूर्व कि कुछ अधिक गम्भीर प्रश्नों का विचार आरम्भ किया जाये, यह उचित प्रतीत होता है कि इस कथा के ऊपर लिखे आरम्भिक भाग पर यहां सम्यक् विचार कर लिया जाये।

शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् स्नातक श्वेतकेतु पांचाल प्रदेश की राज्य–सभा में जाता है। वहां वह क्यों गया था? इस विषय में उपनिषद् में कोई संकेत नहीं किया गया है। एक कारण यह हो सकता है कि वह नौकरी की इच्छा से गया हो। दूसरा कारण यह हो सकता है कि वह परीक्षा देकर किसी बड़ी सनद, पदवी वा मान–बड़ाई की कामना करता हो। यह भी सम्भव है कि उस समय के प्रचलित राज–नियम के अनुसार शिक्षा–प्राप्ति के पश्चात् उस का राज्यसभा में जाना और वहां उस की शिक्षा की जांच–पड़ताल का होना आवश्यक हो। यह भी सम्भव है कि वह धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक या राजनैतिक किसी विशेष समस्या का समाधान प्राप्त करने के लिये ही वहां गया हो।

पांचाल देश का राजा जयबलि– प्रवाहण अपने समय का एक बहुत विद्वान् था। अध्यात्मवाद का वह एक बड़ा विशेषज्ञ था। शंका–समाधान के लिये उसके पास विद्वानों का आना–जाना लगा ही रहता था। राजा का नाम प्रवाहण और उस के पिता का नाम जयबलि था। नाम के आरम्भ में पिता का नाम जोड़ने का प्राचीन काल में रिवाज था। इस समय भी नाम के आरम्भ में या अन्त में, पिता का नाम भारत के बहुत–से प्रदेशों में जोड़ा जाता है। छान्दोग्य उपनिषद् के पहले प्रपाठक के आठवें और नौवें खण्ड में, शालवान के पुत्र शिल्क, चेकितायन के पुत्र दालभ्य और जयबलि के पुत्र प्रवाहण के साम–गान विषयक पारस्परिक विचार–विमर्श का उपाख्यान है। हम ने उसे पहले पृथक लेख में दर्शाया है। वहां भी प्रवाहण ने ही अपने दोनों साथियों की विचार–दृष्टियों को प्रगट किया है।

फर्रुख़ाबाद से छोटी लाइन के द्वारा मथुरा जाते हुए, कायम गंज के आस–पास का, जो प्रदेश है, यही प्राचीन काल का पांचाल प्रदेश है। प्राचीन इतिहास में पांचाल देश की उन्नति के बहुत–से उल्लेख पाये जाते हैं। अर्जुन की पत्नी महाराणी द्रौपदी पांचाल–प्रदेश की ही राजकुमारी थी।

राजा श्वेतकेतु से शिक्षा–प्राप्ति के विषय में पूछता है। श्वेतकेतु हां में उत्तर देता है। राजा उस से पांच प्रश्न पूछता है। श्वेतकेतु किसी एक प्रश्न का भी उत्तर नहीं दे सकता। वह लज्जित होकर अपने पिता के पास लौट जाता है और, पूर्ण शिक्षा न देने की शिकायत करता है। उसे शिकायत का हक है।

राजा के प्रश्न असाधारण, गम्भीर और जटिल हैं। प्रश्नों के महत्व को घटाना हम नहीं चाहते। तथापि, ऐसा प्रतीत होता है कि राजा ने बहुत सोच–विचार करके ही वे प्रश्न तैयार कर रखे थे। और नये–नये विद्वानों से वह उन के विषय में पूछताछ किया करता था। विद्या–विनोद की ऐसी बातें आज–कल भी होती हैं। यदि नये विद्वानों के उत्साह को नष्ट करने का अभिप्राय न हो, तो ऐसा करने में कोई दोष नहीं है।

राज्य सभा में श्वेतकेतु की पराजय और राजा के प्रश्नों का विवरण सुनकर आचार्य गौतम आरूणि स्वयं जाकर राज्य–सभा में उपस्थित होते हैं। यद्यपि

वे एक प्रसिद्ध विद्वान हैं, उन का पुत्र भी नव–विद्वान् है, परन्तु फिर भी विद्या का अनुराग आचार्य जी को राज्य सभा में ले जाता है। बहुत कुछ जान लेने पर भी बहुत कुछ जानना बाकी रह ही जाता है। धन्य हैं, वे जिनको ज्ञान की भूख है, जो विनम्र और जिज्ञासु हैं।

राजा आचार्य जी का यथोचित आदर–सत्कार करता है। मनोवांछित धन देने का प्रस्ताव करता है। आचार्य सांसारिक धन का भूखा नहीं है। अतः वह राजा से अनुरोध करता है कि श्वेतकेतु से जो पांच प्रश्न पूछे गये थे, उनके विशद उत्तर उनको बतलाये जायें। विद्वानों का ढंग ऐसा ही होता है। विद्या के सामने वे सांसारिक धन को कुछ भी महत्व नहीं देते।

आचार्य जी की उत्सुकता को देखकर राजा को खेद होता है। खेद का कारण शायद यही होगा कि एक प्रसिद्ध आचार्य भी उन प्रश्नों के उत्तर नहीं जानता। आचार्य की अनभिज्ञता का एक कारण जन्म के आधार पर प्रतिष्ठत वर्णव्यवस्था और उस से उत्पन्न होने वाला ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों का पारस्परिक विद्वेष भी है। इसे उपनिषद्कार ने स्वयं ही प्रगट कर दिया है। राजा के खेद का एक अन्य कारण यह भी हो सकता है कि वह आचार्य के अनुरोध का तिरस्कार नहीं कर सकता। उसे इच्छा न होने पर भी समाधान करना पड़ रहा है। राजा दीर्घकाल तक रहने की शर्त पेश करता है। विद्यानुरागी आचार्य उसे सहर्ष स्वीकार कर लेता है।

उपनिषद् ग्रन्थों में यह बात विशेष रूप से खटकती है कि इन में ब्राह्मणों को प्रायः सभी प्रसंगों में प्रश्नकर्त्ताओं के रूप में, दर्शाया गया है। कोई निश्चित नियम न होने पर भी ऐसा ही है। इस से ब्राह्मणों की अप्रतिष्ठा, क्षत्रियों के विद्वेष का पता चलता है। कहना न होगा कि जिस समय उपनिषदों की रचना हो रही थी, तब जाति–पाँति और ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों में पारस्परिक राग–द्वेष उत्पन्न हो चुके थे, और वे उग्र एवं उग्रतर होते जा रहे थे। ब्राह्मणों में तब ब्रह्म–विद्या के कोई ज्ञाता या उपदेशक रहे ही न हों, सो बात नहीं है। फिर भी उपनिषदों में तो क्षत्रियों को ही ब्रह्म–विद्या का उपदेशक और विशेषज्ञ प्रगट किया गया है। श्री कृष्ण का गीता–उपदेश और क्षत्रियों के ही घरों में उत्पन्न होने वाली पौराणिक अवतार–माला की कहानियों से भी यही तथ्य पुष्ट होता है कि सत्ता सम्पन्न क्षत्रिय वर्ग और उनका चाटुकार पुस्तक लेखक समुदाय, तब ब्राह्मणों को तिरस्कृत करने पर तुला हुआ था। ऐसे उल्लेखों से जन्मजाति के आधार पर नाम मात्र के क्षत्रियों का अनुचित अभिमान भी बढ़ा था और जन्म के आधार पर ही केवल नामोपजीवी ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों के वैर–विरोध भी बढ़े थे। उन वैर–विरोधों के भारी–भारी दुष्परिणाम भारत सन्तान को भोगने पड़े हैं और आज भी भोग ने पड़ रहे हैं।

राजा ने श्वेतकेतु से जो पांच प्रश्न पूछे थे, वे इस प्रकार है :–

1. मरने के बाद ये जीव यहां से ऊपर जिस स्थान में जाते हैं, क्या आप उसे जानते हैं?

2. जैसे वे फिर लौटकर आते हैं, क्या आप उसे जानते हैं?

3. देव–यान और पितृ–यान के मार्ग जहां से जुदा होते हैं, क्या आप उसे जानते हैं?

4. मरने के पश्चात् यहां से सब जीव जहां जाते हैं, वह लोक भर क्यों नहीं जाता? क्या आप इसे जानते हैं?

5. पांचवीं आहुति में जल ही जीव–वाचक कैसे हो जाते हैं? क्या आप इसे जानते हैं?

उपनिषद् में आगे इन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दिये गये हैं। उपनिषद्–साहित्य में यह प्रसंग "पंचाग्नि–विद्या'' के नाम से प्रसिद्ध है। इस का उल्लेख आगे किया जा रहा है।

क्रमशः

■■■

भेल आर्य समाज मन्दिर में महर्षि दयानंद शोध संस्थान की स्थापना

रविदेव गुप्त

आर्य समाज ने समाज में शिक्षा के क्षेत्र में लोगों को शिक्षित करने की दिशा में बहुमूल्य योगदान दिया है। इसी दिशा में इस कार्य को आगे बढाने का काम आर्य समाज बी. एच.ई.एल. सेक्टर द्वारा किया जा रहा है। उसी के चलते आर्य समाज बीएचईएल सेक्टर द्वारा स्थापित की जा रही महर्षि दयानंद शोध संस्थान शोधार्थियो के लिये बहुत उपयोगी साबित होगी। यह उदगार जाने माने आर्य विद्वान अध्यक्ष महर्षि दयानंद वैदिक अध्यन केन्द्र आचार्य बलवीर ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को बतौर मुख्य वक्ता सम्बन्धित करते हुए व्यक्त किये।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड के उपाध्यक्ष डा. महेंद्र आहुजा ने अपने सम्बोधन मे कहा की आज आर्य जगत के गौरव रहे वैदिक विद्वान आचार्य स्व० डा० महवीर अग्रवाल पूर्व कुलपति उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय प्रति कुलपति पतंजलि विश्वविद्यालय की प्रेरणा से यह शोध पीठ स्थापित हो रही है स्व० महावीर अग्रवाल का यह स्वप्न था की वैदिक शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में वैदिक शोध पीठ की स्थापना की जाये उनका वह सपना आज साकार हो रहा है।

स्थापित शोधपीठ के अध्यक्ष डा. योगेश शास्त्री ने जानकारी देते हुए कहा की स्व० आचार्य प्रो० महावीर अग्रवाल की प्रेरणा से शुरू की जा रही इस शोध पीठ में वेद, संस्कृत, दर्शन उपनिषेद धर्म शास्त्र तथा आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान करनेवाले शोध छात्रों को बेहतर सुविधाएं व संसाधन तथा वैदिक विद्वानों का सानिध्य व मार्गदर्शन उपलब्ध कराया होगा जिससे की वह अपना शोध कार्य पूर्ण कर समाज निर्माण में अपना योगदान दे सके।

इस अवसर पर आर्य समाज मे बहुमूल्य योगदान के लिए गिरधारी लाल चंदवानी को आजीवन सेवा अभिनंदन सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्होंने यह सम्मान आर्य समाज को समर्पित करते हुए कहा की समाज में यदि हम समाज के लिए कुछ कर सकते है तो यही सच्ची ईश्वर सेवा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा संचालन डा.योगेश शास्त्री व बलवीर तलवार ने किया।

इस अवसर पर उत्तराखंड आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष डी. पी. यादव, डा. अशोक रुस्तगी, ज्ञानेश अग्रवाल, कृष्ण कुमार चंदवानी, डा.रजत अग्रवाल, डा. रविंद्र, संजीव गुप्ता, भुवनेश, डा. एस. के. गुलाटी, ज्ञानचंद गुप्ता ारत मुनि, डाबब्लू आर्य, भेल आर्य समाज सेक्टर वन के प्रधान बलवीर तलवार, मंत्री मदन सिंह, कोषाध्यक्ष राजबीर सिंह प्रचार

मंत्री वेद प्रकाश गौतम सहित बड़ी संख्या मे नगर के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

■■■

पदार्थो का सूक्ष्म प्रभाव

प्रभु के बनाए पदार्थ जितने शीतल और गरम है। उनका प्रभाव शरीर पर पड़ता है। इसी तरह ही सूक्ष्म शरीर, मन, बुद्धि पर उनके गुणों का प्रभाव पड़ता है। शरीर में तो गर्मी, सर्दी उत्पन्न करते ही हैं, किन्तु मन बुद्धि में विषय उत्पन्न करते हैं। खटाई से लोभ, मिठाई से मोह, कड़वा व गर्म से क्रोध बदबूदार (दुर्गन्ध वाले व गाढ़े रस वाले) से काम उत्पन्न होते हैं। जिन पदार्थो से जिस-जिस की अधिक रूचि होती है, उस-उस में वैसा-वैसा अवगुण उत्पन्न होता है। अहंकार अपनी भावना अनुसार जितना अधिक स्वादिष्ट बनाता है उतना ही पदार्थो को रजोगुणी बनाता है। राजसिक भाव से अगर कोई व्यक्ति खाता है तो उतना ही उसमें अहंकार बढ़ता है। चिकने पदार्थ खाने वाला खुशामद पसन्द होता है।

आर्य समाज मंदिर विकास नगर का 131वा वेद प्रचार सप्ताह एवं वार्षिकोत्सव

कार्यक्रम 14 सितंबर 2025 से प्रारंभ हो कर 20 सितंबर 2025 तक चला। पूर्णाहुति के यज्ञ के साथ हर्षोउल्लास से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। प्रसिद्ध वेद प्रवक्ता आचार्य योगेश भारद्वाज जी मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) भजनोपदेशक पंडित दिनेश पथिक जी अमृतसर पंजाब से पधारे। गुरुकुल पौधा के आचार्य डॉ धनंजय जी, ब्रह्मचारी राहुल जी, आर्य समाज BHEL के पुरोहित योगेंद्र मेधावी जी, चंदन शास्त्री जी ने यज्ञ भजन प्रवचन का दायित्व संभाला।

यजमान, श्री अमिताभ, मीनू वर्मा, विवेक कुमार, सोनिका वालिया आयुष्मान, उन्नति, गंभीर सिंह, शशिबाला, अभ्युदय सोनाक्षी, डा प्रवेश गुप्ता, रीना, प्रदीप, भारत कालड़ा, परवीन अग्रवाल, यजमान बने।

पंडित चंदन शास्त्री एवं गुरुकुल पौधा के ब्रह्मचारी श्रीमान राहुल जी ने यज्ञ संपन्न कराया।

वैदिक मंत्रों उच्चारण से आध्यात्मिक वातावरण बन गया।

अमृतसर पंजाब से पधारे पंडित दिनेश पथिक जी ने भक्ति भाव के भजनों से धर्म प्रेमियों को मंत्र मुक्त कर दिया ।

महर्षि दयानंद के कार्यों का महत्व बताया।

भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म को अंधविश्वासो और पाखंडों से बचाने का महान कार्य ऋषि ने किया था।

भजनों पर श्रोतागण भक्ति भाव से सरोबार हो गए।

पूरी सभा के सैकड़ों श्रोताओं ने खड़े होकर पथिक जी का अभिवादन किया।

गुरुकुल पौधा से पधारे वैदिक प्रवक्ता आचार्य डॉक्टर धनंजय जी ने सभा का ओज पूर्ण वाणी में संबोधन किया।

उन्होंने बताया वेद और विज्ञान एक साथ चलते हैं।

सब सत्य विद्या और पदार्थ विद्या का आदि मूल परमेश्वर है। दुखों से छूट जाना ही वास्तविक सुख है। वेदों में पुनर्जन्म का और कर्म फल का सिद्धांत वर्णित है।

दोनों सिद्धांत एक दूसरे के पूरक हैं। गुरु पूर्णिमा सावन पूर्णिमा पितृपक्ष की अमावस्या इन सब त्योहारों का वैज्ञानिक आधार है। कार्यक्रम का संचालन श्री अमिताभ अनिरुद्ध एवं नंदनी गुप्ता ने किया। आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून की जिला प्रधान श्रीमती सोनिका वालिया उपप्रधान श्री केदार सिंह रावत जी ने आर्य समाज के सामाजिक कार्यों की जानकारी से अवगत कराया।

मंदिर के प्रधान श्री नरेंद्र वर्मा, मंत्री दीपक बंसल, कोषाध्यक्ष विवेक कुमार, संरक्षक सदस्य समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री रामपाल रोहिल्ला, दिनेश सिंह, हरीकिशोर महिंद्रा, दयानंद तिवारी, डॉक्टर नरदेव शर्मा विनीता रानी, विजय वर्मा, ईश्वर मेहंदीरत्ता, विनीता रानी, विजय वर्मा, पूनम रोहिला, सुनीता भट्ट, शोभा सिंह, सुषमा तोमर, अनुपम, नीतू तोमर, सोनिया वर्मा, कंचन, आकृति , मिथिलेश, सविता, सीमा, सुषमा चावला, रेनू, सावित्री दिव्या, उन्नति, आंचल, सौम्या, नीलम, अनीता रोहिल्ला, सीमा, कविता, अस्मिता, मोनाक्षी, शालिनी, प्रवीण अग्रवाल, डॉ प्रवेश गुप्ता, सुनील, विजेंद्र सैनी, मुकुंदी लाल, अजय, नागेंद्र, मुकेश के सी भट्ट, यशपाल, दिव्यम, गुड्डू, सोम प्रकाश, रतन सिंह, प्रदीप सिह जी गयाननद, ज्ञानेंद्र, मोहित, दिव्यांश, डॉक्टर विनीत रोहिल्ला कुलदीप, राजेंद्र, अमरजीत सिंह, स्वामी, राजेश, संजीव, मेमपाल आदि उपस्थित रहे

कार्यक्रम में वरिष्ठ सदस्यों को सम्मानित करने की श्रंखला में श्रीमान जितेंद कौशिक जी को शॉल ओढ़ा कर और पटका पहना कर सम्मानित किया गया। उनको सत्यार्थ प्रकाश भेंट में दी गई।

उपस्थित हुए श्रद्धालुओं में :–

भोगपुर, डोभरी, सोरना, शंकरपुर, हरबर्टपुर, रुद्रपुर लांघा, भूड़, चांदपुर, होरावाला, भीमावाला, पौधा गुरुकुल, उगरपुर गुरुकुल सहारनपुर, आदि क्षेत्रों से धर्म प्रेमी सज्जनों ने कार्यक्रम में बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

कार्यक्रम के समापन पर शांति पाठ से सभा विसर्जित की गई। उसके बाद ऋषि लंगर का सब अतिथियों नगरवासियों ने आनंद लिया।

■■■

आर्य समाज मन्दिर धामावाला का पांचदिवसीय वेद प्रचार- प्रसार महोत्सव का सहर्षोल्लास समापन

'स्वर्गकामो यजेत'

(आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्विशताब्दी जन्मोत्सव तथा आर्य समाज की स्थापना के 150 वे वर्ष के उपलक्ष्य में आर्य समाज मन्दिर धामावाला के सौजन्य से पांचदिवसीय वेद प्रचार–प्रसार महोत्सव के समापन का कार्यक्रम बड़ी धूम–धाम व सहर्षोल्लास दिनांक 28–09–2025 को संपन्न हुआ। वेद प्रचार प्रसार का कार्यक्रम दिनांक 24–09–2025 से 28–09–2025 तक प्रातः एवं सायंकालीन सत्र में देहरादून नगर के विभिन्न विद्यालयों जैसे दयानन्द इण्टर कॉलेज, सुभाष नगर, राम प्यारी आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, तथा देहरादून नगर के विभिन्न क्षेत्रों के आर्य जनों के निवास स्थान पर किया गया। आचार्य विद्यापति शास्त्री जी द्वारा यज्ञ करवाया गया। विश्व विख्यात भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी, चंडीगढ़ के भजनों तथा आर्य जगत के विख्यात वैदिक विद्वान आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री जी, आगरा द्वारा प्रवचनों के माध्यम से प्रेरणादायक वेदवाणी की गंगा में श्रोताओं ने गोते लगाए और आत्मिक एवं आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया।

चंडीगढ़ से पधारे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के उपदेश व मधुर भजनों के माध्यम से विभिन्न सामाजिक विषयों पर प्रकाश डाला। उन्होंने सत्संग, स्वाध्याय, चिन्तन और मनन विषयों पर भजनों व दृष्टान्त के माध्यम से प्रेरणादायक सन्देश दिए। उन्होंने ईश्वर भक्ति, ईश्वर द्वारा संसार की रचना, देश भक्ति, ऋषि दयानन्द जी के भजनों, उपदेशों व संगीत के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय बना दिया, जिसका उपस्थित आर्य जनों ने भरपूर आनन्द उठाया। शहीद भगत सिंह के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में स्मरण करते हुए देश भक्ति के गीत के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

पांच दिवसीय वेद प्रचार–प्रसार महोत्सव कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सुप्रसिद्ध आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री जी, ने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्य समाज के माध्यम से मानवता का पाठ पढ़ाया। महर्षि दयानन्द के जीवन का मुख्य लक्ष्य संसार का उपकार करना अर्थात शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना। भारत की विभिन्न शिक्षा प्रणाली के सन्दर्भ में विद्या, शिक्षा और साक्षरता में अन्तर की व्याख्या की। शिक्षा को सही सही जानकार जीवन में उतारना विद्या कहाता है। उन्होंने बताया कि स्वामी विरजानन्द जी द्वारा स्वामी दयानन्द जी से गुरु दक्षिणा मांगने पर समाज के कल्याण हेतु वेद प्रचार, पाखंड, रूढ़िवाद, छूया–छूत आदि कुरीतियों को दूर करने के लिए जीवन अर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल अर्थ कमाने के लिए है जहां संस्कार नहीं दिए जाते। उन्होंने कहा कि वैदिक काल में प्रचलित गुरुकुलीय शिक्षा पद्वति से ही भारत विश्वगुरु बन सकता है। भारत की स्वतंत्रता का प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द जी ने दिया था। उन्होंने राजनितिक स्वतंत्रता से पहले विचारों, पाखंड और रूढ़िवादी परम्पराओं से स्वतंत्र होने की बात कही। उन्होंने यजुर्वेद के मन्त्र 'स्वर्गकामो यजेत' – अर्थात स्वर्ग के अभिलाषी को यज्ञ करना चाहिए। उन्होंने स्वर्ग तथा यज्ञ की परिभाषा करते हुए कहा कि सुख विशेष का नाम स्वर्ग है और दुःख विशेष का नाम नर्क है और वह कर्मों के आधार पर इसी संसार में इसी जीवन में मिलता है। यज्ञ–के तीन भाग देव पूजा, संगतिकरण और दान। ईश्वर के विषय पर चर्चा

करते हुए उन्होंने कहा कि ईश्वर, जीव और प्रकृति को जाने बिना सच्चे ईश्वर को नहीं जान पाएंगे। इसलिए त्रैतवाद और कर्मफल सिद्धांत को समझना अति आवश्यक है। जो मानव जीवन का विकास तथा मुक्ति चाहते हैं उन्हें निरन्तर आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय तथा अभ्यास करते हुए जीवन में आचरण करना आवश्यक है।

आर्य समाज धामावाला द्वारा आयोजित वेद प्रचार–प्रसार के अन्तिम दिवस के प्रातः कालीन कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज मन्दिर धामावाला में संपन्न हुआ। सांयकालीन सत्र का आयोजन आर्य समाज कोलागढ़ में किया गया।

देहरादून नगर के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में जिन यजमान विद्यालयों तथा आर्य जनों के निवास पर कार्यक्रम आयोजित किया गया उनके नाम हैः–

1 .दयानन्द कन्या इण्टर कॉलेज, सुभाष नगर, 2. श्री सुभाष चन्द्र गोयल, 3. राम प्यारी आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, 4 श्रीमती विजयेश्वरी आर्या जी एवं श्री प्रीतम सिंह आर्य जी, 5. श्रीमती रीता शेखरी जी एवं श्री प्रमोद शेखरी जी, 6. श्रीमती प्रमिला आर्या जी एवं श्री मदन मोहन आर्य जी, 7. श्रीमती रेखा आर्या जी एवं श्री चंद्रपाल सिंह जी, 8. स्त्री आर्य समाज करणपुर, 9. आर्य समाज कौलागढ़। सभी यजमान विद्यालयों तथा परिवारों को उनके सहयोग के लिए स्मृति चिन्ह भेंट किये गए। रविवार के प्रातःकालीन सत्र में श्रीमती मृदुला गुलाटी जी एवं श्री सुधीर गुलाटी जी तथा श्रीमती अरुणा गुप्ता जी एवं श्री पंथ देव गुप्ता जी ने मुख्य यजमान के रूप में यज्ञ किया।

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने में जिन आर्यजनों ने भाग लिया उनके नाम हैं रू आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड के, पूर्व प्रधान श्री दयानन्द तिवारी जी, देहरादून जिला सभा की प्रधान श्रीमती सोनिका वालिआ जी, श्री ज्ञान चन्द गुप्ता जी, श्रीमती शीला गुप्ता जी, श्री सतीश चन्द जी, श्री धीरेन्द्र मोहन सचदेव जी, श्रीमती नवीन सचदेव जी, श्रीमती अरुणा गुप्ता जी, श्रीमती संगीता चड्ढा जी, श्रीमती मृदुला गुलाटी जी, श्री लक्ष्मण दास आर्य जी, श्री नारायण दत्त पंचाल जी, श्री अश्विनी पंचाल जी, श्री अशोक कुमार जी, श्रीमती रेखा आर्य जी, श्री चन्द्र पाल सिंह जी, श्री पवन कुमार जी, श्री बसंत कुमार जी, श्री अशोक नारंग जी, श्री आदर्श कुमार अग्रवाल जी, श्री मदन मोहन आर्य जी, श्रीमती प्रमिला आर्य जी, श्री देवेंद्र कुमार जी, श्री प्रताप सिंह रोहिल्ला जी, श्री सुभाष चंद्र गोयल जी, तथा आर्य समाज कोलागढ़, स्त्री आर्य समाज करणपुर, आर्य समाज लक्ष्मण चौक, आर्य समाज राजपुर, आर्य समाज प्रेम नगर, आर्य समाज सुभाष नगर तपोवन, विकास नगर, डोईवाला, नत्थनपुर तथा अन्य समाजों के पदाधिकारी व सदस्य गण।

श्री नवीन भट्ट जी, मंत्री ने कार्यक्रम का सञ्चालन बहुत ही सुन्दर ढंग से संपन्न करवाया। श्री नारायण दत्त पंचाल जी मंत्री ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद प्रकट किया। श्री सुधीर गुलाटी जी ने वैदिक विद्वान के उपदेशों, भजनोपदेशक के भजनों तथा यज्ञ ब्रह्मा का सक्षिप्त वर्णन करते हुए उनके मार्गदर्शन व प्रस्तुति पर आभार प्रकट किया। मुख्य अतिथि, विशिष्ठ अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए उनके आगमन पर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने और सहयोग के लिए धन्यवाद् प्रकट किया। उन्होंने सभी यजमान परिवार, दान दाताओं, श्रोताओं पदाधिकारियों, सदस्यों व अन्य श्रोताओं का उनके योगदान के लिए धन्यवाद् प्रकट किया। शांति गीत तथा शांति पाठ के उपरान्त ऋषि लंगर के साथ महोत्सव का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

■■■

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के आर्य समाज मन्दिर धामावाला,देहरादून स्थित पंजीकृत कार्यालय के नवीनीकरण का उद्घाटन दिनांक 14 -09 -2025 को आचार्य विद्यापति शास्त्री जी द्वारा मंत्रोचारण के साथ सभा के प्रधान श्री डी. पी. यादव जी, मंत्री श्री चन्द्र प्रकाश जी , कोषाध्यक्ष श्री नारायण दत्त पंचाल जी, वरिष्ठ सदस्य श्री ज्ञान चन्द गुप्ता जी, डॉ. आदित्य आर्य जी, डॉ. विनय खुल्लर जी, डॉ. महेन्द्र आहूजा जी, श्री आनन्द प्रकाश अग्रवाल जी, श्री संदीप यादव जी, श्री योगेंद्र मेधावी जी, श्री विभु ग्रोवर जी, डॉ. श्याम सिंह जी, श्री अजय सिंह वर्मा जी, श्री मनमोहन सिंह जी, श्रीमती स्नेहलता खट्टर जी, श्रीमती शीला आर्य जी, श्रीमती संगीता चड्ढा जी, श्री शंकर सिंह क्षेत्री जी, तथा उत्तराखंड की सभी आर्य समाजों/संस्थाओं से पधारे प्रतिनिधियों की उपस्थिति में विधिवत संपन्न हुआ ।

उद्घाटन के उपरांत श्री डी. पी. यादव प्रधान जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा की वार्षिक बैठक संपन्न हुई ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी०) के नवीनतम कार्यालय का उद्घाटन

अधर्म पर धर्म की विजय,
असत्य पर सत्य की विजय,
बुराई पर अच्छाई की विजय,
पाप पर पुण्य की विजय,
अत्याचार पर सदाचार की विजय,
क्रोध पर दया, क्षमा की विजय,
अज्ञान पर ज्ञान की विजय,

शान्ति और अमन के इस देश से,
अब बुराई को मिटाना होगा,
आतंकी रावण का दहन करके
आज फिर श्री राम को वापस आना होगा
विजयदशमी की सभी को शुभकामनाएं

अमृत पथ

कार्यालय : आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड (पंजी)
आर्य समाज मन्दिर, धामावाला, देहरादून
Email : aryapsuk@gmail.com
Facebook : Arya Pratinidhi Sabha Uttarakhand

अदेयता की स्थिति में कृपया लौटाएं, 'अमृत पथ' मासिक, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, आर्य समाज मन्दिर, धामावाला, देहरादून-248001
श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव जी (प्रधान) मो.: 9837011321, श्री चन्द्र प्रकाश जी (मंत्री) मो.: 9761939183, ज्ञान चन्द गुप्ता आर्य (प्रबन्ध सम्पादक) मो.: 9897346730